दिगन्तर

न्याय और समता के लिए शिक्षा

वार्षिक रपट 2013–14

रपट लेखन : विश्वंभर

दिगन्तर
शिक्षा एवं खेलकूद समिति
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड
जगतपुरा, जयपुर–302017 राजस्थान
फोन : 0141–2750230, 2750310
फैक्स : 0141–2751268

वेबसाइट : www.digantar.org

अनुक्रम

1. **पृष्ठभूमि** 2

2. **दिगन्तर का शिक्षा दर्शन** 3

3. **दिगन्तर विद्यालय** 5

   i. उद्देश्य 6
   ii. अध्ययनरत बच्चे एवं शिक्षक 6
   iii. दिगन्तर विद्यालय की विशेषताएं 7
   iv. विद्यालय की मुख्य गतिविधियां 7
   v. शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशालाएं 7
   vi. साप्ताहिक शेयरिंग बैठकें 13
   vii. महासभा 14
   viii. विद्यालय उत्सव व कार्यक्रम 14
   ix. अन्य गतिविधियां 16
   x. ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम 21
   xi. प्रकाशन 23
   xii. समुदाय सहयोग एवं भागीदारी 24
   xiii. बाहरी संस्थाओं द्वारा विद्यालय अवलोकन 25

4. **अकादमिक संदर्भ इकाई (तरू)** 26

   i. तरू की स्वतंत्र गतिविधियां 25
   ii. अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ भागीदारी 30

5. **शिक्षा विमर्श** 33

6. **शिक्षक संबलन कार्यक्रम** 35

7. **संदर्भ सहायता इकाई** 38

8. **परिशिष्ट** 39

———

पृष्ठभूमि

दिगन्तर बतौर एक स्वयंसेवी संगठन पिछले करीब 35 सालों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। दिगन्तर भारत जैसे बहुलतावादी लोकतांत्रिक समाज की जरूरतों के अनुसार बच्चों के लिए अर्थपूर्ण, उपयुक्त और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए प्रयासरत है। दिगन्तर का मानना है कि एक सुविचारित योजना के तहत शिक्षा समाज के व्यापक उद्देश्यों को हासिल करने का साधन है।

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य विवेकपूर्ण स्वायत्तता, सभी के प्रति संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक व समतावादी मूल्यों, मानव जीवन की गरिमा, कौशलों को कर्म में परिणत कर पाने की क्षमता तथा श्रम के प्रति सम्मान का विकास करना तथा बच्चे को सीखने में आत्म–निर्भर बनाना है।

1978 में दिगन्तर की शुरुआत एक छोटे वैकल्पिक विद्यालय के रूप में हुई। इस विद्यालय के दो शिक्षकों का आरंभिक प्रशिक्षण डेविड ऑसब्रो के सानिध्य में हुआ। शुरुआती सालों में डेविड ऑसब्रो दिगन्तर विद्यालय के संचालन को दिशा–निर्देशित भी करते रहे। दिगन्तर विद्यालय के शुरुआती दस साल आरंभिक शिक्षा की सामान्य समझ और कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं की समझ की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण थे। दिगन्तर विद्यालयों का एक मकसद शैक्षिक सिद्धान्तों को शैक्षिक व्यवहार में लाना रहा है।

दिगन्तर विद्यालय लगभग दस सालों तक जयपुर शहर में चलता रहा। 1986 के आसपास दिगन्तर विद्यालय के इस प्रयोग से जुड़े छोटे समूह ने महसूस किया कि इस विद्यालय से अर्जित अनुभवों का लाभ थोड़े बड़े समूह को मिलना चाहिए। इसलिए 1987 में दिगन्तर विद्यालय का पंजीकरण ''दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति''[1] के नाम से करवाया गया और जयपुर शहर से सटे दक्षिण–पूर्व के ग्रामीण अंचल के वंचित बच्चों के लिए कार्य करना आरंभ किया। 1994 के बाद दिगन्तर ने विद्यालय संचालन के अलावा एक संदर्भ केन्द्र के रूप में अन्य शैक्षिक संस्थाओं को मदद करना आरंभ किया।

दिगन्तर का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य विवेकपूर्ण स्वायत्तता, सभी के प्रति संवेदनशीलता, लोकतांत्रिक व समतावादी मूल्यों, मानव जीवन की गरिमा, कौशलों को कर्म में परिणत कर पाने की क्षमता तथा श्रम के प्रति सम्मान का विकास करना है तथा बच्चे को सीखने में आत्म–निर्भर बनाना है।

[1] दिगन्तर संस्था को दिया गया सभी प्रकार का दान/अनुदान आयकर अधिनियम की धारा 10(23)() के अन्तर्गत कर मुक्त है। कानून 1976 के अन्तर्गत विदेशी योगदान (नियमन) पंजीकृत है।

संस्था के तौर पर दिगन्तर के मुख्य उद्देश्य हैं:

- शैक्षिक चिंतन एवं शैक्षिक विचारों को व्यवहारिक धरातल पर परखना।
- शैक्षिक चिन्तन के अनुरूप उपयुक्त शिक्षण विधियों और शिक्षण सामग्री का विकास करना तथा उन्हें प्रोत्साहित करना।
- शिक्षा से संबंधित शोध कार्य को प्रोत्साहन देना।
- शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत लोगों तथा संस्थाओं को शैक्षिक मदद मुहैया कराना।
- सांस्कृतिक उन्नयन तथा सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करना।

दिगन्तर का शिक्षा दर्शन

दिगन्तर का विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चे को स्व–प्रेरित और सीखने में आत्म–निर्भर बनाना है। दिगन्तर का मानना है कि इंसान में अपने निर्णय स्वयं कर पाने की क्षमता है और वह स्व–निर्देशित कर्म कर सकता है। साथ ही उसे अपने कर्मों प्रति जवाबदेह और दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है। इन सभी काबिलियतों के विकास में बेहतर स्कूली वातावरण, अभिव्यक्ति के अवसर, निर्णय लेने की स्वतंत्रता और सुनियोजित शैक्षिक प्रक्रियाएं महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

हमारा विश्वास है कि प्रत्येक बच्चा समाज में जीवनयापन करने के लिए जरूरी क्षमताएं अर्जित करने, जीवन में अपने लक्ष्य तय करने, चुने हुए लक्ष्यों को पाने हेतु राह खोजने, उपयुक्त कार्य करने और इन कार्यों की जिम्मेदारी लेने में सक्षम है। हर इंसान को अपने बारे में सोचने व तय करने का अधिकार है और यह उसका कर्त्तव्य भी है।

दिगन्तर समानता और न्याय के सिद्धान्त में यकीन करता है। सभी बच्चों को शिक्षा के समान अवसर सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में बढ़ने का औजार हो सकता है तथा शिक्षा समाज के प्रत्येक सदस्य में स्वायत्त और विवेकशील बनने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

दिगन्तर समानता और न्याय के सिद्धान्त में यकीन करता है। सभी बच्चों को शिक्षा के समान अवसर सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में बढ़ने का औजार हो सकता है तथा शिक्षा समाज के प्रत्येक सदस्य में स्वायत्त और विवेकशील बनने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मानव जीवन समाज में ही सम्भव है। परस्पर अन्तःनिर्भर सामाजिक जीवन में सभी प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान अनिवार्य है। इसलिए संवेदनशीलता का विकास शिक्षा के उद्देश्य के रूप में महत्त्वपूर्ण है।

समानता के मूल्य पर आधारित समाज को बनाए रखने के लिए, जिसमें व्यक्ति अपने बारे में सोच सके और अपने निर्णय खुद ले सके, एक–दूसरे के प्रति सम्मान और विचारों का आदान–प्रदान नितान्त आवश्यक है। बिना शर्त सभी के लिए समान भागीदारी और निष्पक्ष व विवेकसंगत विमर्श एक महत्त्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य है। किसी भी विवेकसंगत बातचीत में निर्णय लेने के लिए साझा मापदण्ड की जरूरत होती है। इस बातचीत को जारी रखने तथा उपयोगी बनाने के लिए प्रतिभागियों में समालोचनात्मक चिन्तन कर पाने की काबिलियत व उसके बारे में प्रासंगिक जानकारी का होना अनिवार्य है। दिगन्तर का विश्वास है कि शिक्षा इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

इसके साथ ही सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन में व्यक्ति के उत्पादक योगदान के लिए शिक्षा में विभिन्न कौशलों के विकास और उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की भी अनदेखी नहीं की जा सकती। दिगन्तर शिक्षा के माध्यम से समंजस्यपूर्ण और परस्पर सहभागिता पर आधारित एक न्यायपूर्ण समाज की परिकल्पना करता है।

हम एक ऐसे बहुलवादी व लोकतांत्रिक समाज की कल्पना करते हैं जो सभी लोगों के लिए न्याय, समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा का रक्षक हो। दिगन्तर शिक्षा के माध्यम से वैचारिक स्वायत्तता तथा विचारों को कर्म में परिणित कर पाने का साहस विकसित करने का प्रयास करता है, इसी सपने को पूरा करने में अपना योगदान करता है।

दिगन्तर विद्यालय

विद्यालय शैक्षिक चिन्तन को धरातल पर उतारने का एक स्थान है। अपने–आपको एक जीवंत शैक्षिक संस्था बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय एक संस्था के तौर पर अपने लक्ष्यों और व्यवहार के बीच सतत पुनर्चिंतन करता रहे। दिगन्तर ने लगभग 35 साल के अपने अनुभव में शैक्षिक चिन्तन को धरातल पर उतारने और शैक्षिक व्यवहार पर पुनर्चिंतन की कुछ प्रक्रियाएं निर्धारित की हैं।

दिगन्तर विद्यालय का आरंभ 1978 में हुआ। यह विद्यालय आरंभिक शिक्षा में बेहतर विकल्प तलाशने तथा विकसित करने के लिए प्रयासरत है। सात बच्चों से आरंभ हुए दिगन्तर विद्यालय के इस सफर में साल 2013–14 में 536 बच्चे अध्ययनरत रहे हैं। वर्तमान में दिगन्तर विद्यालय जयपुर शहर के दक्षिण–पूर्व में सांगानेर पंचायत समिति के ग्रामीण क्षेत्र (खो–रेबारियान तथा भावगढ़ बंध्या गांव) में संचालित है। इस विद्यालय में आस–पास की 28 ढाणियों के कुल 536 बच्चे (प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक) अध्ययनरत हैं। भावगढ़ विद्यालय में प्राथमिक से उच्च माध्यमिक स्तर तथा खो रेबारियान विद्यालय प्राथमिक स्तर तक संचालित है। इन विद्यालयों में करीब 5–6 किलोमीटर की दूरी से बच्चे आते हैं। विद्यालय में 58 बालिकाएं माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत हैं।

दिगन्तर विद्यालय के लिए वर्ष 2013–14 कठिनाइयों से भरा रहा है। आगामी सालों के लिए अनिश्चित वित्तीय सहायता के चलते ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा नई वित्तीय मदद जुटाने में लगा है। इसके बावजूद दिगन्तर विद्यालय शैक्षिक सिद्धान्तों, शिक्षण विधाओं, उपयुक्त शिक्षण सामग्री और शिक्षकों की शिक्षा के बेहतर संचालन के लिए सतत प्रयासरत रहा है। साथ ही समुदाय के साथ नियमित संवाद ने विद्यालय संचालन में उनकी सक्रिय भागीदारी हासिल की है।

दिगन्तर विद्यालय के उद्देश्य

- ✧ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वजनीकरण के प्रयासों में मदद करना व उपलब्ध कराना।
- ✧ आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों व शैक्षिक सिद्धान्तों को दिशा देने में मदद करना।
- ✧ शिक्षकों के विकास के लिए शिक्षाक्रम एवं शिक्षण सामग्री विकसित करना।
- ✧ आरंभिक शिक्षा के क्षेत्र में सिद्धान्त और व्यवहार के बीच के अन्तर को कम करना।
- ✧ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से वंचित बच्चों, विशेषकर बालिकाओं के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना।
- ✧ विद्यालय और समुदाय के बीच सहज एवं भरोसेमंद संबंध कायम करना तथा विद्यालय के संचालन और प्रबंधन में समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

दिगन्तर का मानना है कि विद्यालय सभी बच्चों को तभी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करवा सकते हैं जब सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं का आरंभ बच्चों के संदर्भ से किया जाए, सीखने–सिखाने के तरीके बच्चे की समस्याओं को संबोधित करें, बच्चों के स्तर के अनुरूप शिक्षण सामग्री हो, आकलन के तरीके बच्चों के सीखने में आने वाली समस्याओं को चिन्हित करने और दूर करने में सहायता प्रदान करें।

अध्ययनरत बच्चे एवं शिक्षक

दिगन्तर विद्यालय में वर्ष 2013–14 में अध्ययनरत **कुल 536 बच्चे** (343 बालिकाएं, 193 बालक) हैं। जिनका समूहवार विवरण निम्न तालिका में वर्णित है :–

विवरण तालिका

विद्यालय स्तर	समूह	शिक्षक	बच्चे		
			बालिकाएं	बालक	कुल
प्राथमिक	12	13	192	142	334
उच्च प्राथमिक	05	07	93	51	144
माध्यमिक	02	02	39	–	39
उच्च माध्यमिक	01	05	19	–	19
कुल	**20**	**27**	**343**	**193**	**536**

विद्यालय की कुछ विशेषताएं :

- विद्यालय में बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता है। बच्चे अपने अनुभव व क्षमताओं के आधार पर एक–दूसरे के सहयोग करते हुए सीखते हैं। इसलिए बच्चों को कक्षाओं में बांटने की बजाय उनके स्तरानुकूल समूह बनाए गए हैं।
- बच्चे दण्ड और भय रहित वातावरण में सीखते हैं।
- बच्चे स्कूली विषयों के अलावा रचनात्मक गतिविधियों, संगीत, नाटक, हस्तकलाओं आदि में भागीदारी करते हैं।
- बच्चों की विद्यालय संचालन में भागीदारी होती है।
- विद्यालय की कोशिश है कि शैक्षिक सिद्धान्त और शिक्षण प्रक्रिया में फर्क न हो।
- बच्चों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता है तथा समस्त शिक्षण सामग्री एवं पुस्तकें विद्यालय द्वारा मुफ्त मुहैया करवाई जाती हैं।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में वर्णित शिक्षण विधाओं तथा सतत व व्यापक मूल्यांकन को 1978 से ही दिगन्तर विद्यालयों में व्यवहार में लाया जाता रहा है।
- उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर विकल्प तलाशने के लिए प्रयासरत है। विशेष तौर पर ग्रामीण बालिकाओं के लिए।

मुख्य गतिविधियां

किसी भी विद्यालय को जीवंत बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि बच्चों और शिक्षकों का सीखने के प्रति आकर्षण लगातार कायम रहे। एक जीवंत विद्यालयी गतिविधियों में नियमितता और बदलाव, दोनों का, महत्त्व होता है। नियमितता विद्यालय को संस्था का रूप प्रदान करती है और रोजमर्रा की दिनचर्या में बदलाव एकरूपता एवं नीरसता को तोड़ने में मदद करता है। इसके साथ ही सीखने–सिखाने में विविधता सीखने के प्रति आकर्षण को बनाए रखने में मदद करते हैं। दिगन्तर विद्यालय एक हद तक इसमें कामयाब रहा है। वर्ष 2013–14 में विद्यालय में नियमित गतिविधियों के साथ एकरूपता एवं नीरसता को तोड़ने वाली विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। साल में हुई गतिविधियों की एक संक्षिप्त झलक यहां प्रस्तुत है।

शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशालाएं

दिगन्तर मानता है कि बेहतर शिक्षण एवं बच्चों के सीखने के लिए शिक्षकों को निरंतर सीखते रहने और अपने अनुभवों पर पुनर्चिन्तन करते रहने की आवश्यकता होती है। इसके लिए दिगन्तर में शिक्षकों के लिए नियमित कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2013–14 में शिक्षकों की क्षमतावर्धन के लिए निम्न कार्यशालाएं आयोजित की गईं:

ग्रीष्मकालीन कार्यशाला

वार्षिक गतिविधि कलेण्डर के अनुसार हर साल जून माह में बच्चों के ग्रीष्मकालीन अवकाश के वक्त शिक्षकों की 30 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस कार्यशाला में अगले साल के लिए विद्यालय की जरूरतों को चिन्हित करने, उनके अनुरूप मिलकर तैयारी करने व आगामी वर्ष के कार्य की रूपरेखा तैयार की जाती है। 1 से 30 जून 2013 तक शिक्षक क्षमतावर्धन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में किए गए कार्य इस प्रकार हैं:

1. सतत एवं समग्र मूल्यांकन (प्राथमिक से उच्च माध्यमिक) पर कार्य किया गया
2. शिक्षाक्रम (उच्च प्राथमिक से उच्च माध्यमिक) बनाया गया
3. शिक्षण सामग्री (प्राथमिक से उच्च माध्यमिक) का निर्माण किया गया
4. गत वर्ष महसूस की गई शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षकों द्वारा प्रस्तुतियां तैयार की गईं एवं चर्चाएं की गईं।
5. समन्वयक टीम द्वारा विभिन्न शैक्षिक मुद्दों पर प्रस्तुतियां तैयार की गईं एवं चर्चाएं की गईं।
6. बाहर से आए संदर्भ व्यक्तियों के साथ विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक मुद्दों पर गहन चर्चाएं की गईं।
7. अभिव्यक्ति एवं कला क्षमताओं के विकास हेतु विभिन्न कार्य किए गए।
8. शिक्षक एवं समन्वयन समूह शैक्षिक भ्रमण पर गए।
9. नाटय प्रस्तुति के लिए अभ्यास व उसका प्रस्तुतिकरण किया गया।

दिगन्तर विद्यालय में यह हर वर्ष आयोजित होने वाली कार्यशाला है और महीने के समस्त कार्यदिवसों में शिक्षक, समन्वयक एवं बाहरी संदर्भ व्यक्तियों के साथ विभिन्न मुद्दों पर कार्य किया गया। इस कार्यशाला के दौरान अंग्रेजी शिक्षण के लिए दिगन्तर विद्यालय द्वारा विकसित शिक्षाक्रम पर चर्चा की गई तथा उसे परिष्कृत किया गया। उच्च प्राथमिक के लिए विषयानुसार शिक्षाक्रम में विषय की प्रकृति, उद्देश्य, पाठ्यक्रम और शिक्षण के तरीकों का समावेश किया गया, विभिन्न शिक्षाक्रम तथा पाठ्यक्रम का अध्ययन कर शिक्षकों ने सतत एवं समग्र मूल्यांकन प्रपत्रों पर साझी समझ बनायी, विद्यालय की जरूरत और उद्देश्यों पर विचार–विमर्श हुआ तथा एक–दूसरे की मदद से आगामी सत्र की तैयारी के लिए शिक्षण सामग्री का पैकेज तैयार किया। इसके अलावा नाट्य प्रस्तुति तैयार कर मंचन किया गया।

विज्ञान शिक्षण कार्यशाला

शिक्षकों के विकास एवं बेहतर विज्ञान शिक्षण के लिए 27 नवम्बर 2013 को एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला तीन अलग–अलग स्तर पर आयोजित की गई। प्राथमिक स्तर पर कार्य कर रहे सभी शिक्षकों एवं उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षकों ने कार्यशाला में भाग लिया। प्राथमिक स्तर पर मुख्य रूप से तीन मुद्दों पर कार्य किया गया।

- पर्यावरण अध्ययन के अन्तर्गत किए जा रहे कार्यों का विश्लेषण किया गया। कार्य की मजबूतियों व कमियों को रेखांकित किया गया। साथ ही इन कठिनाइयों या कमियों को दूर करने की रणनीति पर गहनता से विचार विमर्श किया गया।
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के लक्ष्यों पर अधिक स्पष्टता की जरूरत महसूस हुई तथा प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षण के स्पष्ट लक्ष्य बनाना तय किया।
- शिक्षण के दौरान उपयोग में ली जा रही सामग्री का उपयोग किस प्रकार किया जाए इसे समझा गया तथा सामग्री की अहमियत साझी समझ बनाई गई।

28 नवम्बर 2013 को उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें उच्च प्राथमिक स्तर के विज्ञान शिक्षक व अकादमिक समन्वयक शामिल हुए। इस कार्यशाला में मुख्य रूप से निम्न कार्य किए गए:

- वर्तमान में चल रहे विज्ञान शिक्षण की स्थिति का विश्लेषण कर बिन्दु चिन्हित किए गए।
- बच्चों में विज्ञान शिक्षण से विकसित होने वाली क्षमताओं एवं दक्षताओं पर चर्चा कर आगे के काम की योजना एवं अंकन पर विचार विमर्श किया गया।
- प्रोजेक्ट वर्क की प्रकृति एवं उस पर बच्चे व्यक्तिगत रूप से कैसे कार्य करें इसके चरणों पर बातचीत की गई।

शिक्षण सामग्री निर्माण कार्यशाला

इस वर्ष जनवरी माह में अत्यधिक सर्दी के कारण जिला कलेक्टर द्वारा प्राथमिक स्तर के बच्चों का 1 जनवरी 2014 से 24 जनवरी 2014 तक अवकाश घोषित कर दिया गया। अतः अवकाश के दिनों में प्राथमिक स्तर के सभी शिक्षकों के लिए कार्यशाला की योजना बनाई गई। इस कार्यशाला में मुख्य रूप से तीन चरणों में कार्य करना तय किया गया। प्रथम चरण में मुख्य रूप से टी.एल.एम. (सहायक शिक्षण सामग्री) तैयार करना तय किया गया ताकि बच्चों की बेहतर समझ के लिए स्तरानुसार सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण हो सके।

प्रथम चरण में अंग्रेजी विषय पर सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण का कार्य किया गया। अंग्रेजी विषय में बच्चों के साथ कहानियों पर काम करने हेतु बच्चों के स्तरानुसार चित्र सहित कहानियों के चार्ट तैयार किए गए। आरंभिक स्तर पर कार्य कर रहे बच्चों के साथ जरूरत के अनुसार सिखाये जाने वाले नये शब्दों के चित्र सहित कार्ड तैयार किए गए। पढ़ना–लिखना सीख रहे बच्चों के लिए वाक्य पट्टिकाएं तैयार की गईं। प्राथमिक स्तर के अंतिम वर्ष में अध्ययनरत बच्चों के लिए चित्र सहित व वर्कशीट के रूप में छोटे–छोटे पाठ तैयार किए। आगामी दिनों में सिखाई जाने वाली अंग्रेजी कविताओं के चित्र सहित चार्ट तैयार किए गए। ए से जेड तक वर्णों की ध्वनि सीखने हेतु शब्द चित्र कार्ड तैयार किए गए।

द्वितीय चरण में गणित एवं हिन्दी शिक्षण पर सहायक सामग्री विकास का कार्य किया गया। गणित विषय में संख्या पद्धति पर आधारित चार्ट जिसमें खुल्ले एवं डिब्बों सहित संख्याएं लिखी गईं। पहाड़ों के चार्ट तैयार किए गए। स्तरानुसार (जोड़, बाकी, गुणा, भाग) संक्रियाओं पर आधारित कार्ड तैयार किए। इबारती सवालों के कार्ड तैयार किए गए। प्राथमिक के अंतिम वर्ष में अध्ययनरत बच्चों के लिए (प्रतिशत, मापन, परिमाप, भिन्न आदि) अवधारणाओं से संबंधित सवाल तैयार किए।

हिन्दी शिक्षण के लिए सहायक सामग्री निर्माण में प्राथमिक स्तर पर अंतिम वर्ष में अध्ययनरत बच्चों के लिए (लिंग, वचन, पर्यायवाची शब्द, मुहावरे व विलोम शब्दों) के चार्ट तैयार किए। पढ़ना–लिखना सीख रहे बच्चों के लिए पुस्तक के अनुसार मात्रा कार्ड तैयार करना। सीखे गए वर्ण व मात्राओं के आधार पर पाठ (Text) तैयार किया। वर्ण व मात्राओं के शब्द कार्ड व चार्ट तैयार किए।

दूसरे चरण में पर्यावरण अध्ययन विषय पर भी कार्य किया गया। इसके अन्तर्गत अलग–अलग शिक्षण बिन्दुओं पर थीम तैयार करने का कार्य किया, ताकि शिक्षक इनका उपयोग कर बच्चों की बेहतर समझ बना सकें। कार्यशाला में सभी प्राथमिक शिक्षक, अकादमिक समन्वयक व कार्यकारी निदेशक शामिल रहे। कार्य पूर्ण होने के बाद प्रत्येक विषयवार तैयार सामग्री पर समूह के सुझाव के बाद अन्तिम रूप दिया गया।

कार्यशाला के तीसरे चरण में पर्यावरण अध्ययन में बच्चों के स्तरानुसार तीन शिक्षण बिन्दुओं–

1. हमारा शरीर, 2. पेड–पौधे एवं 3. मानचित्र पर थीम के रूप में कार्य किया गया। यह कार्य नियमित रूप से चार दिन तक चला। तैयार थीम पर बड़े समूह में चर्चा की गई तथा इस दौरान आए सुझावों को शामिल करते हुए थीम को अन्तिम स्वरूप दिया गया।

अंग्रेजी शिक्षण कार्यशाला

अगस्त 2013 में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी भाषा शिक्षण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य रूप से निम्न बिन्दुओं पर कार्य किया गयाः

- ❖ वर्तमान में अंग्रेजी शिक्षण के दौरान किए जा रहे कार्य के तरीकों को समझना।
- ❖ समझना कि सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग किस प्रकार करें?
- ❖ बच्चों की शैक्षणिक स्थिति का प्रस्तुतिकरण।
- ❖ आगामी कार्य की रूपरेखा बनाना।

कार्यशाला के अन्त में अंग्रेजी शिक्षण की एक शोध योजना बनाई गई।

उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी की कार्यशाला की गई। प्रथम वर्ष के बच्चों के स्तर पर बातचीत कर पूरी योजना विस्तार से बनाई गई व साथ–साथ काम के तरीके व सामग्री पर बातचीत की गई। जिसमें निम्न बिन्दु सुनिश्चित किए गए।

- ❖ एल्फावेट की फोनिक वॉइस पहचान के 26 कार्ड बनाना व प्रत्येक पर दस शब्द होना।
- ❖ फोनिक वॉइस की पहचान में उपयोग किए गए शब्दों को काम में लेते हुए वाक्य बनाने पर काम। यह वाक्य This/That/These/Those/There से संबंधित होंगे। प्रत्येक कार्ड पर लगभग 20 वाक्य होंगे। इन पर काम के बाद He/She/It/I/We/You/They/None से बने वाक्य पढ़ने व लिखने का काम करेंगे।
- ❖ निर्देशों के अनुसार बोलना व समूह में प्रदर्शित करना।
- ❖ समूह में अलग–अलग तरह के चार्ट व कार्ड बनाना Animal, Bird, Relation आदि।
- ❖ कहानी सुनने का काम व बातचीत लगभग 5–6 कहानियां प्रति सप्ताह या 10 दिन में हो सकता है।

  जैसे– Brony bear, Leley and Peley
- ❖ Poem गाना– सप्ताह में 4 दिन।
- ❖ Conversetion & Like fire/school/village /daily poutive
- ❖ Story or Poems पर लगातार काम चलता रहा है।

❖ लेखन में समझकर शब्दों को व Sentence लिखना आदि कार्य।

प्रत्येक बिन्दु पर काम कैसे किया जाएगा व सामग्री क्या होगी, इस पर विस्तार से बात की गई। साथ ही यह तय किया कि प्रतिदिन की जरूरत के अनुसार सामग्री बनाने का काम बीच–बीच में भी किया जाएगा।

माध्यमिक उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी विषय से संबंधित शिक्षकों के साथ कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य रूप से निम्न बिंदुओं पर बातचीत कर साझा समझ बनाने का प्रयास किया गया।

❖ माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, स्तरों पर प्रत्येक बच्चों की स्थिति एवं उनके साथ स्तरानुसार कार्य की एक समयबद्ध बनाना।

❖ तैयार की गई योजनानुसार कार्य हेतु आवश्यक सहायक सामग्री एवं उसको तैयार करना सुनिश्चित करना।

❖ उपरोक्त योजना का निर्धारित समयानुसार क्रियान्वयन।

❖ निश्चित समयान्तराल के बाद इस पर किए गए कार्य एवं कार्य के दौरान आने वाली समस्याओं का विश्लेषण करना।

गणित कार्यशाला

25 सितम्बर 2013 को गणित विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के उद्देश्य

- वर्तमान में प्राथमिक स्तर पर चल रहे गणित के पैकेज पर काम के तरीके, जरूरत व इसमें निहित शिक्षणशास्त्र पर बातचीत करना।
- बच्चों की शैक्षिक स्थिति के विश्लेषण पर बातचीत करना।
- ज्यामिति आकृतियां शिक्षण बिन्दु पर प्राथमिक स्तर पर काम के तरीकों को समझना।

यह कार्यशाला रेखागणित को लेकर की गई जिसमें सर्वप्रथम रेखाओं के खेल की वीडियो क्लिप दिखाई गई। इस वीडियो क्लिप में उन ठोस चीजों को लेकर कार्य प्रारंभ किया गया था जो बच्चे के परिवेश में किसी न किसी रूप में पाई जाती है। अर्थात् वे ठोस चीजें इंसान की आम जिन्दगी से जुड़ी होती हैं। अतः सबसे पहले रेखाओं के खेल के माध्यम से शंकू, वेलन, घन, घनाव, गोला, त्रिआयामी चीजों को लेकर स्पष्ट किया, जिसमें साथ–साथ चर्चा भी की गई। उसके बाद द्विआयामी आकृतियों को लेकर स्पष्ट किया (आयत, वर्ग, त्रिभुज, वृत)।

त्रिआयामी आकृतियां कागज को मोड़कर एवं काटकर बतायी गईं। शंकू बनाने के लिए एक वृत्ताकार कागज के 3/4 भाग बनाकर दिखाया गया। इसी प्रकार बॉक्स/घन बनाने के

लिए आयताकार से बनाया गया। बेलन बनाने के लिए आयताकार का उपयोग किया। रेखाओं के माध्यम आयत, वर्ग, समान्तर चतुर्भुज, वृत, त्रिभुज, पंचभुज, षटभुज, अष्टभुज बनाना सीखा।

साप्ताहिक शेयरिंग बैठकें

शैक्षिक दृष्टि से विद्यालय के बेहतर संचालन के लिए शिक्षकों के साथ विभिन्न स्तर पर अकादमिक बैठक का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों का मकसद सीखने–सिखाने के दौरान आ रही समस्याओं को आपस में बांटना, मिलकर उचित समाधान खोजना और सोच–समझकर काम में एक–दूसरे की मदद करना है। शिक्षकों के समूह को एक 'लर्निंग कम्युनिटी' के तौर पर स्थापित करने, काम में पारदर्शिता बनाए रखने, एक–दूसरे के शिक्षण कार्य को समझने तथा साथियों में ऊर्जा के संचार की दृष्टि से यह शेयरिंग बैठकें आयोजित की जाती हैं।

सीखने–सिखाने के दौरान आ रही समस्याओं को आपस में बांटने, मिलकर उचित समाधान खोजने और सोच–समझकर काम में एक–दूसरे की मदद करना है। शिक्षकों के समूह को एक 'लर्निंग कम्युनिटी' के तौर पर स्थापित करने, काम में पारदर्शिता बनाए रखने, एक–दूसरे के शिक्षण कार्य को समझने तथा साथियों में ऊर्जा के संचार की दृष्टि से यह शेयरिंग बैठकें आयोजित की जाती हैं।

प्राथमिक स्तर के शिक्षक समूह की दो समूह में शेयरिंग बैठक **(साप्ताहिक)** आयोजित की जाती हैं। प्रत्येक समूह में 6–6 शिक्षक तथा अकादमिक समन्वयक शामिल होते हैं। उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर सामूहिक साप्ताहिक शेयरिंग बैठक होती हैं। इन बैठकों में अकादमिक मुद्दों पर की गई चर्चा के कुछ उदाहरण हैं –

भाषा का महत्त्व व शिक्षण के तरीके समझना, अंग्रेजी शिक्षण के लिए उपयुक्त माहौल निर्माण की योजना बनाना, गणित की विभिन्न अवधारणाओं पर प्रस्तुति एवं चर्चाएं करना, पर्यावरण अध्ययन के दौरान प्रायोगिक कार्यों को बढ़ावा देना, कला कार्य में विविधता, संगीत शिक्षण की कार्य योजना बनाना इत्यादि। इसके अलावा बैठकों में शिक्षकों ने समूह शिक्षण के दौरान अर्जित अनुभवों को आपस में साझा किया और बच्चों की जरूरत के अनुसार मिलकर नई शिक्षण सामग्री विकसित की। यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों को एक सीखने वाले समूह के तौर पर सतत सक्रिय रखने का मंच है।

महासभा

महासभा विद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाली एक द्विमासिक शैक्षिक बैठक है। इस बैठक में समस्त विद्यालय समूह शामिल रहता है। यह बैठकें आपस में मिलकर विद्यालय संबंधी चुनौतियों के हल खोजने, अकादमिक मुद्दों पर विचार–विमर्श करने तथा काम में पारदर्शिता बनाए रखने के लिए की जाती हैं। वर्ष 2013–14 में कुल **4 महासभा बैठकों** का आयोजन हुआ जिनमें विभिन्न शैक्षिक मुद्दों पर विचार–विमर्श कर शिक्षण तरीकों को समझने का प्रयास किया गया। **जैसे–** विभिन्न गणितीय अवधारणाएं, इंसान और अन्य प्राणी में फर्क, समता व समानता में फर्क, शेयरिंग के मायने व उद्देश्य, सभा की गुणवत्ता, बच्चों द्वारा निर्मित रचनाएं व कलाकृति, अंग्रेजी व विज्ञान शिक्षण का उपयुक्त माहौल, सामाजिक अध्ययन तथा प्राथमिक उपचार इत्यादि। इसके अलावा विद्यालय में सीखने–सिखाने का बेहतर माहौल, बच्चों का व्यवहार और समूह व्यवस्था संबंधी बातचीत की गई।

विद्यालयी उत्सव व कार्यक्रम

दिगन्तर विद्यालय में समूहवार शिक्षण कार्य के अलावा समय–समय पर अन्य अकादमिक गतिविधियों का आयोजन होता है। विद्यालय के गतिविधि पंचांग में राष्ट्रीय पर्व के अतिरिक्त विविध गतिविधियों को शामिल किया जाता है। जैसे– कला व विज्ञान प्रदर्शनी, बाल मेला, सांस्कृतिक संध्या, पूर्व विद्यार्थी मिलन, फिल्म देखना, शिक्षक दिवस तथा शाला स्थापना दिवस इत्यादि। विद्यालय में इन समारोह के आयोजन से बच्चे इनके महत्त्व से परिचित होते हैं तथा उन्हें एक–दूसरे से सीखने का मौका भी मिलता है। वर्ष 2013–14 के दौरान दिगन्तर विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है, बच्चों और शिक्षकों द्वारा निम्न राष्ट्रीय उत्सवों का आयोजन किया गया–

- ❖ स्वतंत्रता दिवस
- ❖ गणतंत्र दिवस
- ❖ गांधी जयन्ती
- ❖ अम्बेडकर जयन्ती

स्वतंत्रता एवं गणतंत्र दिवस पर बच्चों के द्वारा गीत–कविता, नाटक मंचन तथा झांकी प्रदर्शन किया गया। इसके साथ ही इन दिवसों से संबंधित चित्र प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। 14 अप्रैल 2013 को साप्ताहिक अवकाश (रविवार) होने के कारण दिगन्तर विद्यालय में अम्बेडकर जयन्ती उत्सव 13 अप्रैल 2013 को मनाया गया। दिगन्तर विद्यालय में यह दिन डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कार्यों पर केन्द्रित रहा। विद्यालय में सांस्कृतिक,

प्रदर्शनी, फिल्म प्रदर्शन इत्यादि गतिविधियां आयोजित हुईं। प्रातः बच्चों ने कार्यक्रम का आरम्भ किया। शिक्षक साथियों ने बच्चों को डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन, उनके विचारों तथा सामाजिक योगदान से अवगत कराया। बच्चों ने सामाजिक कुरीतियों (छुआछूत व भेदभाव) पर आधारित झलकियां और नाटक प्रस्तुत कर अमानवीय व्यवहार की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। इसके साथ ही फिल्मों का प्रदर्शन भी किया गया।

2 अक्टूबर 2013 को दिगन्तर विद्यालय में शाला स्तर पर गांधी जयंती उत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को दो चरणों में रखा गया। इसके अर्न्तगत प्रथम चरण में विद्यालय स्तर पर सभी बच्चों ने सामूहिक चित्रांकन किया गया जो कि पूर्व में समूहों में गांधी दर्शन एवं गांधीजी के जीवन से संबंधित कार्यों पर आधारित था। इस चित्रांकन को प्रदर्शित किया गया जिसे आगंतुकों द्वारा प्रदर्शनी के रूप में देखा था। दूसरे चरण के रूप में मंचीय प्रस्तुतियां रखी गई जिनमें शाला के बच्चों द्वारा गांधीजी के जीवन एवं दर्शन से संबंधित विविध गीत, कविताएं, झलकियां, नाटक आदि प्रस्तुत किए गए। इन सभी कार्यक्रमों में समुदाय सदस्यों एवं बच्चों के अभिभावकों ने भागीदारी की।

कला प्रदर्शनी

20 फरवरी 2014 को विद्यालय स्तर पर कबाड़ से जुगाड़ (कला) प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस बार इस प्रदर्शनी का आयोजन राजकीय माध्यमिक विद्यालय, खोह नागोरियान में किया गया। इस प्रदर्शनी में बच्चों के द्वारा विद्यालय में कला कार्य के अन्तर्गत अनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित विभिन्न कलसकृतियां प्रदर्शित की गई। इस प्रदर्शनी में दिगन्तर विद्यालयों के साथ ही आसपास के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के बच्चों सहित बडी संख्या में अभिभावकों एवं समुदाय से लोगों ने अवलोकन किया एवं बच्चों के कार्यों की सराहना की।

विज्ञान प्रदर्शनी

28 फरवरी 2014 को विज्ञान दिवस पर शाला में विज्ञान को प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए सभी तैयारियां नियत समय पर की गईं लेकिन मौसम और भारी बारिश होने की वजह से शाला स्तर पर निर्णय लेते हुए अंतिम क्षणों में प्रदर्शनी को स्थगित करना पड़ा।

अन्य गतिविधियां

स्कूल स्तर पर की जाने वाली गतिविधियों के अलावा विद्यालय के बच्चे एवं शिक्षकों ने विद्यालय से बाहर की कुछ गतिविधियों में भागीदारी की। दिगन्तर विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों ने व्याख्यान कार्यक्रम में भागीदारी की। सुश्री हेमलता प्रभू की स्मृति में आयोजित व्याख्यान माला ''कला, शिक्षा एवं नागरिकता'' में बच्चों के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई तथा बच्चों ने मंच पर ''ऐकला चौलो'' गीत की प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में लगभग 30 बच्चों ने भागीदारी की। इस विषय पर मल्लिका साराभाई ने व्याख्यान दिया। बच्चों की इस कला प्रदर्शनी को दर्शकों ने सराहा।

बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण

'खेजड़ी सर्वोदय जनरल हेल्थ आई केयर सेन्टर' के सहयोग से प्रतिवर्ष दिगन्तर विद्यालय में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है। स्वास्थ्य परीक्षण के अनुसार 31 बच्चे चिन्हित हुए जिनमें खून की कमी है तथा वजन भी कम है। इस समस्या के निराकरण के लिए विद्यालय स्तर पर इन बच्चों के लिए पोषक आहार (दूध व पाउडर) की व्यवस्था की गई है। आरंभिक निराकरण के तहत इन 31 बच्चों को पोषक आहार उपलब्ध करवाकर इनका पुनः स्वास्थ्य परीक्षण करवाया जाएगा। इस संबंध में डॉक्टर ने बच्चों के अभिभावकों से भी बातचीत की। डॉक्टर ने अभिभावकों को बच्चों के स्वास्थ्य के संबंध में ध्यान रखने योग्य मुख्य बातों की जानकारी दी।

बाल पंचायत का पुनर्गठन

विद्यालय स्तर पर होने वाली गतिविधियों में बच्चों को लोकतांत्रिक सहभागिता के अवसर देने के लिए बाल पंचायत का गठन किया गया है। बाल पंचायत का प्रमुख कार्य विद्यालय व्यवस्था संबंधी तमाम निर्णय लेना तथा उन्हें क्रियान्वित करना है। बाल पंचायत की गतिविधियों से विद्यालय में बच्चों की राय और सक्रिय भागीदारी को

महत्त्व मिलता है। बच्चे लोकतंत्र में निर्णय प्रक्रियाओं की पेचीदगियों से न केवल परिचित होते हैं बल्कि उन्हें निर्णय लेना सीखने में मदद भी मिलती है। दिगन्तर विद्यालय में व्यवस्था संबंधी तमाम निर्णय जिनसे बच्चे प्रभावित होते हैं, उनमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। इसी मकसद से दिगन्तर विद्यालय में बाल पंचायत गठित की गई है। इस बाल पंचायत का अपना **'संविधान'** भी विकसित किया गया है। इस संविधान के मुताबिक **18 अप्रैल 2013** को दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ में लोकतांत्रिक प्रक्रिया अनुसार बाल पंचायत का गठन हुआ है। गठन प्रक्रिया के दौरान विद्यालय में निम्न काम किए गए–

- विभिन्न बैठकें आयोजित कर बाल पंचायत के नए गठन की कार्य योजना बनाने व तैयारी का काम किया गया।
- नामांकन व चुनाव चिन्ह आवंटित कर सूची पिनबोर्ड पर प्रदर्शित करना।
- बच्चों द्वारा चुनावी प्रचार–प्रसार करना।
- मतदान एवं मतगणना।
- नए चयनित सदस्यों की घोषणा करना।

बच्चे लोकतंत्र में निर्णय प्रक्रियाओं की पेचीदगियों से न केवल परिचित होते हैं बल्कि उन्हें निर्णय लेना सीखने में मदद भी मिलती है। दिगन्तर विद्यालय में व्यवस्था संबंधी तमाम निर्णय जिनसे बच्चे प्रभावित होते हैं, उनमें बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है।

उपरोक्त प्रक्रिया के अनुसार भावगढ़ विद्यालय में **पांच बच्चे (तीन बालिकाएं व दो बालक)** बाल पंचायत के लिए चुने गए। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर सर्व सम्मति से एक बालिका का निर्वाचन हुआ। इस गतिविधि द्वारा बच्चों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समझने का प्रत्यक्ष अवसर मिला है। बच्चों ने चुनाव प्रक्रिया में सक्रियता से भाग लेकर लोकतंत्र में स्वयं की जिम्मेदारी को समझने एवं निभाने का प्रयास किया।

फिल्म प्रदर्शन

प्रवीणलता संस्था द्वारा आयोजित फिल्म प्रदर्शन के कार्यक्रम में दिगन्तर से सभी बच्चों को शामिल किया गया। वर्ल्ड ट्रेड पार्क में बच्चों को फिल्म दिखाई जिसका सभी ने आनन्द लिया। बच्चों ने फिल्म को देखा, उन्हें काफी आनंद आया। फिल्म देखने के बाद बच्चों के साथ फिल्म पर चर्चा की गई। बच्चों ने फिल्म में अच्छी लगी बातों को साझा किया।

महिला सशक्तिकरण सेमिनार

11 जनवरी 2014 को आदर्श विद्या मंदिर, जयपुर में जैन श्वेतांबर तेरापंथी समाज एवं पी. यूसी.एल संस्था के संयुक्त तत्वावधान में इंडिया इंटरनेशनल कराटे ऐसोसिएशन द्वारा

महिला सशक्तिकरण सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमीनार में महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्मरक्षा हेतु मार्शल आर्ट की तकनीकों को प्रदर्शित किया गया और सिखाया गया। दिगन्तर विद्यालय की लगभग 80 बालिकाएं इस आयोजन से जुड़ी एवं उन्होंने सक्रियता से कार्यक्रम में हिस्सा लेते हुए विविध तकनीकों को सीखा। इस कार्यक्रम से जुड़ी बालिकाओं ने सेमिनार से सीखी हुई तकनीकों को विद्यालय में अन्य बालिकाओं के साथ भी साझा किया।

अन्य संस्थाओं की गतिविधियों में भागीदारी

दिगन्तर विद्यालय के बच्चों के लिए जयपुर से बाहर के शहरों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में शिरकत करने के अवसर निकाले जाते हैं। इस बार बच्चों ने 24 फरवरी, 2014 को निर्वाणवन फाउन्डेशन, अलवर में आयोजित गतिविधि में भागीदारी की। इस कार्यक्रम में दिगन्तर विद्यालय के 20 बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बच्चों ने वहां के स्कूल तथा स्कूल गतिविधियों का अवलोकन किया। शिक्षक साथियों से बातचीत की। बच्चों ने वहां बनी गौशाला देखी। यहां पर बच्चों ने अन्य संस्था व स्कूल से आये बच्चों के साथ संवाद, विचार विमर्श किया। बच्चों ने कार्यक्रम में सक्रियता के साथ भाग लिया।

जयपुर साहित्य समारोह

जनवरी 2014 में तहलका फाउण्डेशन की ओर से जयपुर साहित्य समारोह (जयपुर लिट्रेचर फैस्टीवल) का आयोजन किया गया जिसमें दिगन्तर विद्यालय की दस बालिकाओं ने हिस्सा लिया।

इस वर्ष यह कार्यक्रम आठ दिवसीय एवं दो चरणों में आयोजित किया गया था। प्रथम चरण में नाटक विधा पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रथम चरण का कार्य स्टेप वाइ स्टेप स्कूल में किया गया जिसमें बालिकाओं को नाटक विधा के विभिन्न पक्षों से परिचित करवाया गया। विद्यालय की बालिकाओं ने इस कार्यशाला में सक्रियता से जुड़कर विविध नाटक शैलियों को सीखकर प्रदर्शित किया।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण के अन्तर्गत आयोजित चार दिवसीय साहित्य समारोह में साहित्य की विविध विधाओं पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यकारों ने हिस्सा लिया। इस दौरान साहित्य के विविध सत्र एवं सेमिनारों में बालिकाओं ने अन्य विद्यालयों के बच्चों एवं मेहमानों के साथ अंतःक्रिया करते हुए सक्रिय भागीदारी की। बालिकाओं को इस कार्यक्रम से कला की विविधि शैलियों को सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

दिगन्तर विद्यालय के बच्चों ने विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में शाला स्तर पर सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिगन्तर विद्यालय के नए परिसर में वृक्षारोपण करने एवं बच्चों की प्रकृति से जुड़ाव तथा पर्यावरण के महत्त्व को रेखांकित करने का एक प्रयास था।

शिक्षकों द्वारा समुदाय में नाटक मंचन

नाटक मंचन से समाज की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर समुदाय सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया की गई। शिक्षकों ने दीनदयाल द्विवेदी रचित एक नाटक ''हम सब पागल हैं'' को गांव भावगढ़ व आचार्यों की ढाणी में मंचित किया। नाटक आजादी के 65 वर्ष बाद आज तक भी बनी हुई व्यवस्थाओं पर करारा व्यंग्य करता है। इसमें वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली के अन्तर्गत हमारे अधिकारों का उचित तरीके से उपयोग करने के बारे में बताया गया है। इस नाटक को देखने समुदाय के काफी लोग उपस्थित हुए।

बाल शैक्षिक भ्रमण

शैक्षिक भ्रमण बच्चों एवं शिक्षकों को दुनिया की अलग–अलग व नई जगह देखने का अवसर प्रदान करता है। इससे उनमें दुनिया के बारे में जानने की उत्सुकता को न केवल बल मिलता है बल्कि दुनिया को देखने का उनका नजरिया भी बदलता है। दुनिया एवं समाज की विविधता को समझने का अवसर मिलता है। इन अनुभवों का विभिन्न शैक्षिणिक गतिविधियों जैसे इतिहास शिक्षण, विज्ञान शिक्षण आदि में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। शैक्षिक भ्रमण से बच्चों व शिक्षकों में मिलकर सीखने तथा एक–दूसरे को समझने में मदद मिलती है। इन्हीं उद्देश्यों के फलस्वरूप दिगन्तर विद्यालय में बच्चों और शिक्षकों को शैक्षिक भ्रमण का अवसर दिया जाता है। वर्ष 2013–14 में बच्चों व शिक्षकों ने अपनी रुचि व उत्सुकता अनुसार विभिन्न स्थानों पर भ्रमण के लिए गए। **प्राथमिक** स्तर पर अध्ययनरत सभी बच्चों को तीन अलग–अलग जगहों पर शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जाया गया।

- प्रथम ग्रुप – विज्ञान पार्क व तारामण्डल
- द्वितीय ग्रुप – चर्च, मस्ज़िद, मंदिर, गुरुद्वारा, धार्मिक स्थल
- तृतीय ग्रुप – चिड़ियाघर

उपर्युक्त जगहों पर जाने से पहले व बाद में बच्चों के साथ चर्चा की गई। बच्चों द्वारा विभिन्न स्थलों के बारे में सवाल–जवाब किए गए।

उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों को शैक्षणिक भ्रमण के अन्तर्गत 'जयगढ़' किले (जयपुर) ले जाया गया। बच्चों ने जयगढ़ के इतिहास को समझने का प्रयास किया। इसके बाद चर्चा की गई।

- किले व महलों में क्या आपसी संबंध हैं? यह क्यों बनाए गए होंगे? उस समय की क्या परिस्थितियां रही होंगी? आज के परिप्रेक्ष्य में इनका क्या महत्त्व है? आदि पर चर्चाएं की गईं जिससे बच्चों को इतिहास को समझने में मदद मिली।

शैक्षिक भ्रमण बच्चों एवं शिक्षकों को दुनिया की अलग–अलग व नई जगह देखने का अवसर प्रदान करता है। इससे उनमें दुनिया के बारे में जानने की उत्सुकता को न केवल बल मिलता है बल्कि दुनिया को देखने का उनका नजरिया भी बदलता है। दुनिया एवं समाज की विविधता को समझने का अवसर मिलता है।

विद्यालय गतिविधि केन्द्र

दिगन्तर विद्यालय में एक गतिविधि केन्द्र विकसित करने के लिए स्विटजरलेण्ड की संस्था ''एक्शन फोन द सपोर्ट ऑफ डिप्राइन्ड चिल्ड्रन'' (ASED, ए.एस.ई.डी.) से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है। ए.एस.ई.डी. ने आधारभूत एवं अन्य सुविधाओं के लिए सहायता दी है। जो बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में मददगार होती हैं। ए.एस.ई.डी. द्वारा दिगन्तर के लिए 31 सीटों वाली दो बस एक वाटर ट्रीटमेंट प्लांट और आधुनिक सुविधा–सम्पन्न टॉयलेट के एक ब्लॉक के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। इस परियोजना के संदर्भ में फरवरी 2014 को एक मीटिंग हुई। इस मीटिंग में ए.एस.ई.डी. के प्रतिनिधि भी शामिल रहे। बैठक में प्रोजेक्ट को गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने पर विचार किया गया। इस संबंध में कुछ निर्णय लिए गए हैं, जिनका विवरण इस प्रकार से हैं:–

1. बच्चों के उपयोग हेतु टॉयलेट निर्माण के संदर्भ में अलग–अलग ठेकेदारों से बात कर ठेकेदार के चुनाव को अंतिम रूप दिया गया।
2. बच्चों के लिए स्कूल बस खरीदने के संदर्भ में आइशर कम्पनी की 2 बस खरीदना तय किया गया।
3. वाटर ट्रीटमेंट प्लान्ट के लिए सुजल कम्पनी से लगवाना तय किया गया।

ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम

वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया भर के समाजों में निहित सांस्कृतिक विविधता व समानता पर युवाओं की समझ बनाने तथा इसकी चुनौतियों के लिए तैयार करने की कोशिश के रूप में ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम संचालित किया गया है। यह कार्यक्रम दो देशों के दो विद्यालयों, दो संस्कृतियों व दो अलग–अलग देशों के बीच एक 'लर्निंग पूल' बनाने का प्रयास है। इसके साथ ही कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य शिक्षा के नवाचारों को विस्तृत दायरे में साझा करना, आपस में सीखना एवं अकादमिक मदद के लिए सेतु विकसित करना है।

सांस्कृतिक विविधता व समानता पर युवाओं की समझ बनाने तथा इसकी चुनौतियों के लिए तैयार करने की कोशिश के रूप में ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम संचालित किया गया है। यह कार्यक्रम दो देशों के दो विद्यालयों, दो संस्कृतियों व दो अलग–अलग देशों के बीच एक 'लर्निंग पूल' बनाने का प्रयास है।

इस कार्यक्रम के सुचारू संचालन के लिए डी.एफ. आई.डी. (Department for International Development) द्वारा वित्तीय सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

कार्यक्रम का आरम्भ लॉर्डस्कूडामोर स्कूल, यू.के. तथा दिगन्तर विद्यालय, जयपुर (भारत) में उद्देश्यों की परस्पर शेयरिंग के आधार पर हुआ। वर्ष 2003 में लॉर्डस्कूडामोर स्कूल, यू.के. से दो शिक्षक दिगन्तर स्कूल आकर अपने अनुभव साझा किए। यू.के. स्कूल के शिक्षकों के साथ दोनों ने एक–दूसरे के विद्यालयों के उद्देश्यों को समझा तथा विद्यालयों का अवलोकन किया एवं शिक्षक व बच्चों के साथ बातचीत की।

इसके बाद ब्रिटिश काउन्सिल द्वारा शिक्षा के उद्देश्य व सिद्धान्तों के आधार पर ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप हेतु दिगन्तर विद्यालय का चयन किया गया। इसके परिणामस्वरूप ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप कार्यक्रम 2004 से दिगन्तर विद्यालयों के साथ संचालित हुआ। यह ब्रिटिश काउन्सिल द्वारा संचालित एक शैक्षिक कार्यक्रम है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- दो देशों के दो विद्यालयों व बच्चों के बीच एक 'लर्निंग पूल' बनाना।
- अन्य देशों की संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों का समझना, शिक्षकों व बच्चों के अनुभव संसार को बढ़ाना।
- शिक्षण की नई–नई विधाओं, मूल्यांकन के तरीकों से परिचय तथा उन्हें समझना एवं उनका अपने स्कूल में उपयोग करना।
- स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में एक–दूसरे का सहयोग एवं मदद करना।
- एक–दूसरे के अनुभवों की शेयरिंग तथा एक–दूसरे से सीखना।
- चिन्तन के तरीकों का विकास करना।
- सांस्कृतिक बहुलता में संवेदनशील बनाने के अवसर उपलब्ध कराना।
- अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध कराना।
- सामूहिकता की भावना के विकास के अवसर उपलब्ध कराना।
- कल्पना व सृजनशीलता के दायरों को बढ़ाने के अवसर देना।
- पार्टनरशिप को और अधिक विकसित करना, विषयवार योजनाएं एवं शालाओं का एक–दूसरे की शैक्षिक गतिविधियों के बारे में जानना, शेयर करना तथा उसे क्रियान्वयन करना।
- ग्लोबल स्कूल पार्टनरशिप के द्वारा दोनों पार्टनर स्कूलों का एक–दूसरे की शिक्षण विधि, पढ़ाने का तरीका, शैक्षिक सामग्री के बारे में जानना।

कार्यक्रम के अंतर्गत की गई देशों के पारस्परिक भ्रमण ने दोनों देशों के स्कूलों के मध्य पार्टनरशिप को मजबूत बनाया है। भ्रमण से एक–दूसरे को बेहतर जानने व समझने के मौके प्रत्यक्ष रूप से मिले हैं जिससे एक बेहतर संवाद की स्थिति बनी है। दोनों स्कूलों को नये–नये विचार मिले हैं जो शिक्षण को गुणवत्तापूर्ण बनाने में कारगर सिद्ध हुए हैं। इसके अलावा एक–दूसरे की संस्कृति, कार्यशैली, वातावरण, खान–पान, रहन–सहन के बारे में प्राप्त जानकारी की शेयरिंग से स्कूल के सभी बच्चों व शिक्षकों को एक–दूसरे को समझने व शैक्षणिक स्तर को बेहतर करने में मदद मिली है। विजिट के दौरान मुख्यतः निम्न कार्य किए गए–

- बच्चों के साथ शैक्षणिक गतिविधियां करना।
- विद्यालय की गतिविधियों का अवलोकन करना।
- बच्चे व शिक्षकों के साथ एक–दूसरे की संस्कृति, रहन–सहन, भौगोलिक व सामाजिक स्थितियों पर चर्चा एवं विमर्श करना।
- बच्चों के द्वारा किए गए कार्यों का प्रस्तुतिकरण एवं चिट्ठियों का आदान–प्रदान।

प्रकाशन

विद्यालय में बच्चों व शिक्षकों के अनुभवों की अभिव्यक्ति का मंच देने तथा आपस में बांटने के मकसद से दिगन्तर विद्यालय में एक बाल पत्रिका '**बातूनी**' तथा विद्यालय गतिविधियों पर **न्यूज लैटर** का प्रकाशन किया जाता है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

बातूनी

बच्चों के लिए प्रकाशित यह एक **मासिक पत्रिका** है। यह पत्रिका बच्चों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमताओं को अभिव्यक्त करने का एक मंच है जहां वे अपने अनुभवों को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका में बच्चों द्वारा निर्मित चित्र, कहानियां, बातचीत के अंश, नए अनुभव, पहेलियां, गीत–कविताएं और अपने विचार इत्यादि प्रकाशित किए जाते हैं। इस वर्ष बातूनी के **13 अंक** (रंगीन) प्रकाशित हुए। यह पत्रिका न केवल दिगन्तर विद्यालय के बच्चे के लिए है बल्कि आस–पास के सरकारी व निजी विद्यालय **(40)** के बच्चों की भी पंसदीदा है। इससे बच्चों के संवाद का दायरा बढ़ा है। यह पत्रिका आस–पास के सरकारी व निजी विद्यालय के बच्चों को भी नई रचना करने के लिए प्रेरित करने का काम करती है।

न्यूज लैटर

यह एक **द्विमासिक पत्रिका** है जिसका शिक्षक समूह द्वारा प्रकाशन किया जाता है। इस न्यूज लैटर से शिक्षकों को अपने अनुभवों को आपस में बांटने के

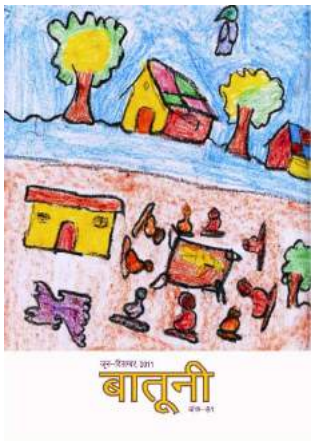

यह पत्रिका बच्चों की रचनात्मक व सृजनात्मक क्षमताओं को अभिव्यक्त करने का एक मंच है जहां वे अपने अनुभवों को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं।

न्यूज लैटर से शिक्षकों को अपने अनुभवों को आपस में बांटने के लिए मंच मिलता है। दिगन्तर विद्यालय की गतिविधियों के साथ ही शिक्षक अपने समूह में शिक्षण कार्य के अनुभवों को इसके माध्यम से दूसरे शिक्षक साथियों से साझा करते हैं।

लिए मंच मिलता है। दिगन्तर विद्यालय की गतिविधियों के साथ ही शिक्षक अपने–अपने समूह में शिक्षण कार्य के अनुभवों को इसके माध्यम से दूसरे शिक्षक साथियों से साझा करते हैं। अपने समूह में शिक्षण कार्य करने और एक–दूसरे के अनुभवों से सीखने तथा शैक्षिक संवाद बनाये रखने की दृष्टि से यह पत्रिका शिक्षकों को अपने अनुभवों पर पुनर्चिंतन के अवसर उपलब्ध कराती है।

इस वर्ष में न्यूज लैटर के **पांच अंक** (अंक 45, 46, 47, 48 व 49 वां) प्रकाशित हुए जिनमें विद्यालय की चिट्ठी, गतिविधियों की जानकारी व तस्वीरों के अलावा शिक्षकों के अनुभवों को साझा करने की कोशिश की गई।

समुदाय सहयोग एवं भागीदारी

आरंभ से ही दिगन्तर के लिए विद्यालय संचालन में समुदाय की भागीदारी महत्त्वपूर्ण विचार रहा है। दिगन्तर की मान्यता है कि बच्चों की सामाजिक परिस्थितियों और सीखने के बीच गहरा संबंध होता है। शिक्षक के लिए इन्हें समझना बच्चे के सीखने में मदद कर सकता है। इसके साथ ही विद्यालय का संचालन एक सामाजिक जिम्मेदारी है। समुदाय और विद्यालय के बीच अन्तःक्रिया विद्यालय प्रबंधन एवं संचालन में अहम भूमिका अदा कर सकते हैं। अतः विद्यालयी गतिविधियों पर समुदाय के साथ संवाद स्थापित करना आवश्यक है। दिगन्तर विद्यालय विभिन्न स्तरों पर साल भर समुदाय के साथ अन्तःक्रिया करता है।

विद्यालय का संचालन एक सामाजिक जिम्मेदारी है। समुदाय और विद्यालय के बीच अन्तःक्रिया विद्यालय प्रबंधन एवं संचालन में अहम भूमिका अदा कर सकते हैं।

(क) संवाद तथा बैठकें

विद्यालय का बेहतर संचालन के लिए समुदाय सहयोग आवश्यक है। दिगन्तर समुदाय के साथ नियमित संवाद तथा निकट संबंध बनाये रखने में यकीन रखता है। अभिभावक एवं समुदाय के लोग समय–समय पर विद्यालय आकर शिक्षकों से विद्यालय संबंधी बातचीत करते हैं। विद्यालय उत्सव व विभिन्न बैठकें आयोजित कर समुदाय के साथ विद्यालय की प्रगति को शेयर कर उनकी राय ली जाती है। इसी प्रयास के चलते वर्ष 2013–14 दौरान समुदाय के साथ कुल **28 बैठकें** आयोजित की गईं।

महिला अभिभावकों के साथ बैठकें

25 अप्रैल 2013 को दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ में महिला अभिभावक बैठक हुई। इस बैठक में संस्था निदेशक रीना दास, कार्यकारी निदेशक, समन्वयक दल तथा हिम्मत सिंह जी शामिल हुए। बैठक में स्वास्थ्य परीक्षण के तथ्य अभिभावकों के साथ साझा किए गए। कार्यकारी निदेशक ने अभिभावकों को अवगत कराया कि विद्यालय में अध्ययनरत 31 बच्चों

में खून की कमी है। इन बच्चों का वजन भी अपेक्षा से कम हैं। खेजड़ी संस्थान के प्रतिनिधि ने अभिभावकों को बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी ध्यान रखने वाली मुख्य बातों से अवगत कराया। साथ ही विद्यालय में इन बच्चों के लिए पोषण आहार (दूध व पाउडर) उपलब्ध कराने की जानकारी दी गई।

बैठकों में काफी संख्या में महिलाएं व पुरुष शामिल हुए। इन बैठकों में समुदाय के लोगों को विद्यालयी गतिविधियों से अवगत कराया गया तथा चुनौतियों पर विचार–विमर्श कर समाधान तलाशने का काम हुआ। जैसे– बच्चों का विद्यालय देरी से आना, कुछ बच्चों की अनियमितता, भवन निर्माण, विद्यालय आने–जाने के लिए रास्ता, पीने का पानी इत्यादि। बैठकों में समुदाय के लोगों को भी अपने विचार व्यक्त करने का मौका मिला। लोगों ने प्राथमिक समूह में उर्दू शिक्षण, बच्चों के आने–जाने के लिए बस तथा महिलाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था करने का आग्रह किया।

इसके अलावा समय–समय पर अभिभावकों के घर जाकर शिक्षकों ने बच्चों की प्रगति को साझा भी किया। समुदाय के अपेक्षित सहयोग से दिगन्तर विद्यालय भावगढ़ व खो–रेबारियान का स्वरूप उभरा है।

(ख) समुदाय के साथ शेयरिंग

विद्यालय की वर्तमान स्थिति पर विचार–विमर्श करने के लिए खो–रेबारियान विद्यालय में बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में दिगन्तर विद्यालय के सभी शिक्षक, समन्वयक दल, सहायता इकाई समूह और संस्था निदेशक के अलावा विद्यालय विकास में अहम भूमिका निभाने वाले समुदाय सदस्य एवं अभिभावक भी शामिल हुए।

बाहरी संस्थाओं द्वारा विद्यालय अवलोकन

साल भर दिगन्तर विद्यालयों के वैकल्पिक प्रयोग को देखने एवं समझने के लिए देश के विभिन्न राज्यों से अवलोकनकर्ता आते हैं। यह अवलोकनकर्ता मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं। एक, एक या दो दिवसीय विद्यालय अवलोकन के लिए और दूसरे, विभिन्न शैक्षिक कॉलेजों एवं संगठनों के नियत कार्यक्रम के तहत अवलोकन के लिए आने वाले विद्यार्थी। वर्ष 2013–14 में करीब 62 संगठनों से विद्यालय अवलोकन के लिए लोग आए। विभिन्न संगठनों से करीब 500 अवलोकनकर्ता आए।

अकादमिक संदर्भ इकाई (TARU, तरू) की संकल्पना शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं एवं दिगन्तर विद्यालयों की अकादमिक मदद के लिए की गई थी। समय और बदलती परिस्थितियों के साथ तरू के कार्यों में भी बदलाव आया। विभिन्न शैक्षिक संस्थानों की मदद के साथ ही दिगन्तर द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं में अकादमिक मदद और शैक्षिक शोध कार्य भी तरू का हिस्सा बनने लगे।

पिछले चार वर्षों से अकादमिक संदर्भ इकाई अपने समय का एक बड़ा हिस्सा अजीम प्रेमजी फांउडेशन के साथ शैक्षणिक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की योजना बनाने, उनमें मदद करने एवं उनके क्रियान्वयन में सहयोग करने में लगाता रहा है। इस साल भी तरू अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ मिलकर कार्य करता रहा है। इसके साथ ही तरू ने अपने पुराने कार्यों को जारी रखा है। 'शिक्षा की आधारभूत समझ' कोर्स ने अपना नौवां वर्ष पूरा कर लिया है। तरू टीम ने कुछ छोटे स्तर पर अध्ययन किए हैं। टीम के सदस्यों ने आलेख लिखे हैं और सेमीनार में पेपर प्रस्तुत किए हैं। फागी में 'शिक्षक संबलन कार्यक्रम' (Teacher Empowerment Programme) को आगे बढ़ाने में मदद की है। तरू द्वारा इस वर्ष किए कार्यों को दो भागों में बांट सकते हैं (1) तरू की स्वतंत्र गतिविधियां एवं (2) अजीम प्रेमजी फांउडेशन के साथ किए गए कार्य। इस वर्ष आयोजित गतिविधियां/कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

तरू की स्वतंत्र गतिविधियां

(i) **'शिक्षा की आधारभूत समझ कार्यक्रम** : यह दिगन्तर द्वारा पिछले करीब नौ सालों से 'शिक्षा की आधारभूत समझ' विकसित करने के लिए आयोजित नियमित कार्यक्रम है। यह शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संगठनों, फाउन्डेशन्स, शिक्षा में रुचि रखने वाले व्यक्तिओं, निजी एवं राजकीय स्कूल अध्यापकों आदि के लिए आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम के तहत 10–10 दिन की 4 कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं जिनमें कुल 13 कोर्स हैं। शिक्षा दर्शन, शिक्षा का समाजशास्त्र, सीखने का मनोविज्ञान, मानवीय समझ और शिक्षाक्रम, स्कूली विषयों की प्रकृति एवं शिक्षणशास्त्र (भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, सामाजिक विज्ञान) शैक्षिक नीति एवं शोध तथा विद्यालय अवलोकन एवं मूल्यांकन आदि पर कोर्स होते हैं। इस कार्यक्रम में बाहरी संदर्भ व्यक्तिओं के साथ तरू टीम के

सदस्य मिलकर कार्य करते हैं। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सहभागियों को शिक्षा के विभिन्न मुद्दों पर एक आलोचनात्मक सैद्धान्तिक समझ विकसित करना है।

वर्ष में कार्यक्रम के अंतर्गत चार कार्यशालाएं आयोजित हुईं जिसमें करीब 30 संभागियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम हेतु पोस्टर, ब्रोशर, फीस एवं कार्यशाला का शिड्यूल, कोर्स कलेण्डर आदि विकसित किए गए। इस बार अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन, भारती फाउन्डेशन, हैरीटेज स्कूल, गुडगांव, शिक्षा विभाग हरियाणा, कृष्णमूर्ति फाउन्डेशन, एकलव्य, संधान, सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज् संस्थाओं से संभागियों ने हिस्सा लिया। कुछ संभागी स्वतंत्र तौर पर भी शामिल हुए।

(ii) पाठ्यपुस्तक समीक्षाः पाठ्यपुस्तकें वर्तमान शिक्षा प्रणाली का अभिन्न हिस्सा हैं। राज्य सरकारें राज्य के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों के लिए पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करती हैं। विभिन्न राज्यों द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन तरू के रुचि का हिस्सा है ताकि नई निर्मित सामग्री आलोचनात्मक समीक्षा हो सके तथा उसकी अच्छाइयों और सीमाओं को चिन्हित कर शैक्षिक विमर्श का विषय बनाया जा सके। इस वर्ष तरू सदस्यों ने निम्न सामग्री की समीक्षा की :

- **राजस्थान की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा** : इस साल राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर ने अलग–अलग विषयों की नई पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन किया है। इन पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण हेतु एक समूह बनाया गया जिसमें योगेन्द्र, प्रियंका, वंदना, सुधीर और कुलदीप शामिल थे। समूह सदस्यों ने हिन्दी (सुधीर), अंग्रेजी (प्रियंका), सामाजिक अध्ययन (योगेन्द्र, सुधीर) एवं पर्यावरण अध्ययन (वंदना) की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करते हुए एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की और इसके आधार पर आलेख लिखे। हिन्दी, अंग्रेजी एवं सामाजिक अध्ययन पर लिखे गए आलेखों का प्रकाशन 'शिक्षा विमर्श' में हुआ।

- **पाठ्यपुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन** : विप्रो एप्लाइंग थॉट्स इन स्कूल्स, बैंगलोर के आग्रह पर निजी स्कूलों में कक्षा 6 से 8 में पढ़ाई जाने वाली विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की कुछ चुनिन्दा अवधारणाओं का एक तुलनात्मक अध्ययन किया गया। सामाजिक विज्ञान में दो निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें, एससीईआरटी एवं एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें ली गईं जबकि विज्ञान में तीन निजी प्रकाशक तथा एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकें ली गईं। विश्लेषण के उपरांत प्रत्येक विषय पर एक रिपोर्ट बनाई गई जिसे वॉटिस के वार्षिक पार्टनर फोरम में प्रस्तुत किया गया। विज्ञान समूह में यह अध्ययन निशी एवं वंदना ने किया जबकि सामाजिक विज्ञान समूह में यह अध्ययन राधिका ने किया।

- **पुस्तक समीक्षा** : सुशील जोशी द्वारा इस वर्ष लिखी गई 'मिडिल स्कूल रसायन' पुस्तक की समीक्षा का कार्य वंदना द्वारा किया गया।

(iii) शिक्षक संबलन कार्यक्रम, फागी : प्राथमिक कक्षा के शिक्षकों के अकादमिक संबलन हेतु एक तीन वर्षीय परियोजना जयपुर जिले के फागी ब्लॉक में शुरू की गई है। इसके लिए वित्तीय मदद वॉटिस द्वारा की जा रही है। यह परियोजना एक Participatory Action Research के रूप में संकल्पित की गई है। यह माना जा रहा है कि शिक्षक पोर्टफोलियो लेखन एवं समूह चर्चा के माध्यम से अपने शिक्षण कार्य पर पुनर्चिंतन करते हुए बेहतर शिक्षण की दिशा में बढ़ेंगे। इस परियोजना से शिक्षकों में रिफ्लेक्टिव सोच और परिणामस्परूप कक्षा कक्ष में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को बल मिलने की संभावना है। तरू की तरफ से इस परियोजना में कुलदीप, योगेन्द्र और राजेश लगातार शामिल रहे हैं। इस वर्ष तरू टीम द्वारा वहां टीम के गठन, अभिमुखीकरण, फील्ड कार्यालय की स्थापना, शोध प्रस्ताव का विकास, विशेषज्ञ समूह का गठन एवं उसकी बैठक आयोजित करने में सहयोग किया गया है। इसके अलावा कार्यक्रम के रोजमर्रा के कार्यों पर बातचीत एवं आवश्यक सहयोग भी तरू की तरफ से किया जाता रहा है।

(iv) दिगन्तर प्रभाव अध्ययन : इस वर्ष दिगन्तर की कार्यकारणी समिति ने दिगन्तर द्वारा पिछले करीब 35 साल से किए जा रहे कार्य के प्रभाव को समझने के लिए एक अध्ययन का प्रस्ताव रखा। इस अध्ययन के लिए एक टीम बनाई गई जिसमें देवयानी एवं निशी शामिल हुईं। इस अध्ययन का निर्देशन दिगन्तर की अध्यक्ष एवं संधान की निदेशक सुश्री शारदा जैन ने किया। अध्ययन की योजना बनाना, विभिन्न स्तरों से डेटा संकलन करना, उसका विश्लेषण करना एवं रिपोर्ट लेखन का कार्य किया गया है। इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार हो गई है। अभी प्रकाशन से पहले कॉपी एडिटिंग का कार्य चल रहा है।

(v) निजी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार की धारा 12 सी के तहत अध्ययन : शिक्षा का अधिकार कानून में धारा 12 सी के तहत निजी स्कूलों में शुरुआती कक्षा में 25 प्रतिशत गरीब एवं वंचित वर्ग के बच्चों को दाखिला देना कानूनी बाध्यता है। इस प्रावधान की अनुपालना से जुड़े अकादमिक, प्रशासनिक एवं व्यवहारिक पक्षों को समझने के लिए 'शिक्षा विमर्श' के सहयोग से जयपुर जिले के आठ निजी स्कूलों में एक लघु अध्ययन किया गया। तरू की तीन सदस्यीय टीम ने इस अध्ययन को करने की जिम्मेदारी ली जिसमें योगेन्द्र, प्रियंका और सुधीर शामिल रहे। कार्य का निर्देशन राजेश कुमार द्वारा किया गया। इसका डेटा संकलन का काम पूरा कर लिया गया है और रिपोर्ट लेखन पर कार्य किया जा रहा है।

(vi) दिगन्तर भाषा प्रोजेक्ट : दिगन्तर द्वारा अब तक हिन्दी भाषा की सैद्धान्तिक समझ एवं शिक्षण के लिए विकसित की गई सामग्री को समझने एवं इसे आवश्यकतानुसार

संशोधित करने हेतु रोहित धनकर के निर्देशन में तीन सदस्यों का एक समूह गठित किया गया जिसमें राजेश कुमार, प्रियंका और सुधीर शामिल हैं। इस साल इस समूह ने भाषा की सैद्धान्तिक समझ और अलग–अलग समय पर विकसित तीन सैटों की सामग्री को पढ़कर और आपस में बातचीत करके एक समझ विकसित की है। अलग–अलग समय में इस सामग्री में आए बदलावों का विश्लेषण करते हुए एक संक्षिप्त आलेख तैयार किया गया।

(vii) स्कूल की आवश्यकताओं का विश्लेषण : गिव इंडिया (Give India) फाउन्डेशन की मांग पर केलवानी कापडवंज मंडल सोसाइटी, गुजरात द्वारा संचालित स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को चिन्हित कर उनका विश्लेषण करने का कार्य किया गया। इस टीम में अब्दुल गफ्फार के साथ तरू से वंदना और राधिका ने भागीदारी की। इस कार्य में कुलदीप एवं राजेश ने मदद की। इस टीम ने प्राथमिक से माध्यमिक तक की शैक्षणिक आवश्यकताओं को समझने के लिए स्कूलों एवं कक्षाओं का अवलोकन किया, स्कूल शिक्षकों और प्राचार्य तथा मंडल अध्यक्ष से बातचीत की। इस डेटा के विश्लेषण के आधार पर रिपोर्ट तैयार करके फाउन्डेशन के साथ साझा किया। फाउन्डेशन के अनुरोध पर शिक्षकों के अकादमिक विकास के लिए एक योजना की रूपरेखा बनाकर उनके साथ साझा की।

(viii) मल्टीग्रेड एवं मल्टीलेवल शिक्षण कार्यशाला : लिंक फाउन्डेशन, नई दिल्ली के अनुरोध पर उनकी टीम के लिए 25 से 27 नवम्बर के दौरान नई दिल्ली में मल्टीग्रेड एवं मल्टीलेवल शिक्षण को समझने के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की संकल्पना, योजना एवं क्रियान्वयन में राजेश कुमार एवं कुलदीप शामिल रहे। इस कार्यशाला में लगभग 25 सदस्यों ने भागीदारी की।

(ix) ऑनलाइन कोर्स : कोर्सरा एक ऑनलाइन पॉर्टल है जो अलग–अलग समयावधि के ऑनलाइन कोर्स आयोजित करता है। इस पोर्टल द्वारा इस वर्ष इवोलूशन पर चार सप्ताह का ऑनलाइन कोर्स आयोजित किया गया जिसमें वंदना ने सफलतापूर्वक भागीदारी की। यह कोर्स शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए था जिसमें प्रत्येक सप्ताह कुछ सामग्री पढ़नी होती थी और एक असाइनमेंट पूरा करके भेजना होता था।

(x) रिपोर्ट लेखन : सेन्टर फोर टीचर नॉलेज रिपोर्ट को पूरा करके टीम सदस्यों एवं रोहित धनकर के साथ साझा किया गया। इस रिपोर्ट पर संस्था से बाहर के कुछ व्यक्तियों के सुझाव भी लिए गए। संस्था के सदस्यों एवं संस्था के बाहर के एक व्यक्ति द्वारा इस पर सुझाव प्राप्त हुआ है जिसके अनुसार रिपोर्ट में आवश्यक संशोधन कर लिए गए हैं। रोहित द्वारा इस रिपोर्ट के पहले चार अध्यायों पर सुझाव प्राप्त हुए और तदनुसार संशोधन किए गए।

(xi) नए सदस्यों का उन्मुखीकरण : इस वर्ष दो नए सदस्यों– प्रियंका एवं राधिका की नियुक्ति की गई। इन सदस्यों के अभिमुखीकरण के लिए राजेश कुमार के सहयोग

से लगभग 20 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। दिगन्तर विद्यालय अवलोकन और अनुभवों पर चर्चा की गई। विद्यालय अवलोकन से पहले एवं बाद में कुछ शैक्षिक आलेख, दिगन्तर द्वारा विकसित सामग्री आदि को पढ़कर उन पर चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण भी किए गए।

(xii) पेपर प्रस्तुतीकरण : डीआईईटी मोती बाग, दिल्ली द्वारा एक सेमीनार का आयोजन किया गया जिसका थीम थाः 'Education for A Changing World – Challenges for Teacher & Teacher Educatior'। इस सेमीनार में राजेश कुमार द्वारा पेपर प्रस्तुत किया गया जिसका शीर्षक था : In service Teacher Education : Aberration Into Education। इस पेपर को फागी के अनुभवों के आधार पर फागी टीम एवं राजेश कुमार द्वारा विकसित किया गया था।

(xiii) पेपर लेखन : इस वर्ष तरू टीम सदस्यों के कई आलेख 'खोजो जानो' पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं जिसमें से 'समावेशी शिक्षा' पर प्रियंका, अंग्रेजी शिक्षण की कठिनाइयों पर निशी और देवयानी के आलेख प्रकाशित हुए हैं। क्वालिटी एज्युकेशन प्रोग्राम, बारां के अनुभवों पर आधारित एक आलेख योगेन्द्र द्वारा भी लिखा गया है जिसके प्रकाशित होने की संभावना है।

अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ भागीदारी

पिछले चार सालों से तरू अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ कार्य करता रहा है। इसके तहत तरू सदस्य फाउन्डेशन द्वारा आयोजित कार्यशालाओं, सेमीनार, प्रशिक्षण, संदर्शिका निर्माण, सामग्री निर्माण, शोध अध्ययन और विभिन्न कोर्स/कार्यक्रमों के विकास एवं क्रियान्वयन में सहयोग करते रहे हैं। वर्ष 2013–14 के दौरान तरू सदस्य अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ निम्न कार्यों में शामिल रहे हैं :

(i) सह–विकास कार्यक्रम (Co-Development Programme) फाउन्डेशन के 'सह–विकास कार्यक्रम' का उद्देश्य शिक्षकों के लिए विषय आधारित *'शिक्षक संदर्शिकाएं'* एवं *'सामग्री'* का विकास करना है। इसमें फाउन्डेशन की फील्ड टीम के सदस्य शामिल हैं। यह कार्यक्रम टीम के सदस्यों की अकादमिक क्षमतावर्धन तथा वैकल्पिक सामग्री निर्माण के लिए संकल्पित है। इसके लिए विषय आधारित अलग–अलग समूह बनाए गए हैं। पिछले साल तरू सदस्य भाषा (हिन्दी) एवं विज्ञान समूह का हिस्सा रहे हैं। यह कार्यक्रम

सह–विकास टीम विषय विशेषज्ञों के साथ कार्यशालाओं, छोटे समूहों में कार्य, अपने स्तर पर कार्य, ई–ग्रुप चर्चाओं एवं टेले–कॉन्फ्रेंसिग के माध्यम से साल भर चलता है। इस प्रक्रिया से सामग्री/संदर्शिका को अन्तिम रूप प्रदान किया जाता है। शिक्षक संदर्शिका या सामग्री को टीम द्वारा अन्तिम रूप दिए जाने के बाद शिक्षक समूह के साथ पायलेट किया जाता है और शिक्षकों के फीडबैक के बाद जरूरत के अनुसार पुनः बदलाव किए जाते हैं। 'सह विकास कार्यक्रम' के तहत पिछले एक वर्ष के दौरान किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण अग्रलिखित है :

- **विज्ञान समूह :** विज्ञान समूह में 'जीव विज्ञान', 'भौतिक विज्ञान' एवं 'रसायन विज्ञान' के तीन उपसमूह हैं। तरू टीम से वंदना और निशी 'जीव विज्ञान' समूह में शामिल रहे हैं। इस वर्ष में दो को–डवलेपमेंट समूह की बैठकों और तीन क्षमतावर्धन कार्यशालाओं का आयोजन हुआ है। तरू सदस्यों ने कार्यशालाओं में भागीदारी के साथ कुछ असाइनमेंट और रिपोर्ट लेखन के काम की जिम्मेदारी भी वहन की है। इस दौरान इसमें तरू सदस्यों ने 'Vegetative reproduction; New avenues in plants breeding & Propagation : Prospects, issues & Concerns; Post-fertilization events in flowering plants (developments of endosperm, embryo and seeds)' पर आलेख विकसित किए हैं। साथ ही दूसरे समूह सदस्यों द्वारा विकसित आलेखों/सामग्री पर सुझाव भी दिए हैं। 'सैल मॉड्यूल' पर रुद्रपुर में आयोजित कार्यशाला के लिए टूल्स विकसित किए, कार्यशाला की योजना बनाने में हिस्सेदारी की, कार्यशाला में सत्र लिए और एक दिन की रिपोर्ट लिखी। इसी तरह सिरोही में आयोजित कार्यशाला में सत्र लिए। इस वर्ष कुछ अंग्रेजी आलेखों 'Approaches to teach Biology; Biological perspective on human learning & intelligence; A categorization scheme for Principles of Sequencing Content का सार संक्षेप भी तैयार किया।

- **भाषा (हिन्दी) समूह : सह–विकास के** हिन्दी समूह में तरू से देवयानी शामिल रही हैं। इस साल भाषा समूह में तरू सदस्य ने भाषा को समझने के लिए विभिन्न आलेख लिखने, मॉड्यूल विकास करने, मॉड्यूल के संपादन समूह में भागीदारी करने तथा सामग्री को संपादित करने में सहभागिता की है। इसके साथ ही विकसित मॉड्यूल की पायलेटिंग के लिए विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिक्षक प्रशिक्षणों में सुगमकर्ता के रूप में भागीदारी की है। इस दौरान भाषा समूह की क्षमतावर्धन कार्यशालाओं में भी देवयानी शामिल रही हैं।

  फाउन्डेशन ने प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री के नेतृत्व में एक ऐसा समूह तैयार करने की पहल की है जिसकी भाषा विज्ञान एवं शिक्षा से संबंधित भाषा के मुद्दों पर गहरी समझ विकसित हो। इसमें तरू से देवयानी शामिल रही हैं। यह समूह हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड भाषा का समेकित समूह है। इसका उद्देश्य भाषा पर एक सुगमकर्ता समूह तैयार करना है। अभी तक इसकी एक कार्यशाला हुई है।

(ii) **पाठ्यपुस्तक विश्लेषण कार्यशाला** : तरू टीम ने अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के साथ मिलकर छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं उत्तराखंड की पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण पर साल भर में चार कार्यशालाओं का आयोजन किया। इस कार्यशालाओं का मकसद इन राज्यों की पाठ्यपुस्तकों को आलोचनात्मक नजरिए से परखना और पाठ्यवस्तु पर समझ विकसित करना रहा है। इसके लिए सर्वप्रथम एक पाठ्यपुस्तक विश्लेषण की रूपरेखा विकसित की गई और इसके बाद पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया। इस कार्यशाला में दिगन्तर से विश्वंभर, कुलदीप, देवयानी और निशी ने भागीदारी की।

(iii) **शिक्षा का परिप्रेक्ष्य** : अजीम प्रेमज़ी फाउन्डेशन में फील्ड स्तर पर नए प्रवेश लेने वाले सदस्यों की शिक्षा में गहरी समझ विकसित करने के लिए 'शैक्षिक परिप्रेक्ष्य' नाम से एक 15 दिवसीय कोर्स की शुरुआत की है। फाउन्डेशन एवं तरू टीम ने मिलकर इस कोर्स को विकसित किया है। यह कोर्स हर दो महीने में आयोजित किया जाता है। इस कोर्स में शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों के साथ शिक्षा से जुड़े अन्य पहलुओं जैसे शिक्षण, आकलन आदि पर चर्चा की जाती है। कोर्स की संकल्पना, सामग्री निर्माण से लेकर कार्यशालाओं के आयोजन एवं उसकी समीक्षा में राजेश कुमार, कुलदीप गर्ग और विश्वंभर शामिल रहे हैं। अभी तक इसकी दो कार्यशालाएं आयोजित हो चुकी हैं।

(iv) **शोध कार्य** : फाउन्डेशन एवं तरू सदस्यों ने मिलकर एक शोध अध्ययन समूह निर्मित किया है। यह 'शोध अध्ययन' समूह विभिन्न शैक्षिक मुद्दों पर समय–समय पर अध्ययन आयोजित करेगा। इस साल इस समूह में तरू की तरफ से प्रियंका, निशी, देवयानी, योगेन्द्र, निशा एवं सुधीर शामिल रहे हैं। इस समूह ने इस साल 'राजस्थान के शैक्षिक परिदृश्य' को समझने के लिए सैकण्डरी डेटा के आधार पर एक अध्ययन की योजना विकसित की है। इस योजना के तहत एक शोध प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है और इसके लिए आवश्यक सामग्री की सूची बनाई गई है। यह अगले साल भी जारी रहेगा।

(v) **शिक्षा दर्शन (PoE) सेमीनार** : अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के 'शिक्षा के दर्शन' विभाग के तत्वाधान में पिछले साल से शिक्षा दर्शन पर क्षेत्रीय सेमानारों का आयोजन शुरू हुआ है। इस वर्ष भी जयपुर में एक क्षेत्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। इस सेमीनार में तरू से निशी, कुलदीप, प्रियंका, योगेन्द्र, विश्वंभर, राजेश कुमार, राधिका, अशोक और मधुलिका ने भागीदारी की। राजेश कुमार ने 'द कन्सेप्ट ऑफ क्वालिटी इन एज्युकेशन' सत्र की अध्यक्षता भी की।

(vi) **नाटक कार्यशाला:** शिक्षा में नाटक की भूमिका पर समझ विकसित करने के लिए फाउन्डेशन ने दिसम्बर माह में एक सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में तरू से राधिका ने भागीदारी की।

शिक्षा विमर्श का प्रकाशन पिछले करीब 16 सालों से हो रहा है। मार्च 1998 में मासिक पत्रिका के तौर पर आरंभ हुई शिक्षा विमर्श अभी द्वैमासिक है। शिक्षा विमर्श की संकल्पना जमीनी स्तर पर कार्य कर रहे कार्यकताओं के लिए हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण साहित्य उपलब्ध कराने, सिद्धान्त एवं व्यवहार के बीच सेतु कायम करने, बिना गंभीर विचार विमर्श के शिक्षा में प्रवेश पा लेने वाले शैक्षिक विचारों और समसामयिक नीतिगत निर्णयों पर आलोचनात्मक समझ विकसित करने के लिए की गई थी। शिक्षा विमर्श के प्रकाशन का मकसद पाठकों को अपने स्तर पर सोच–समझकर शैक्षिक निर्णय करने में सक्षम बनाना है।

शिक्षा विमर्श के प्रकाशन के लगभग 15 साल पूरे होते–होते एक बार फिर वित्तीय मदद का संकट उत्पन्न हुआ। 2012–13 में शिक्षा विमर्श के प्रकाशन के लिए किसी तरह की वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं थी। संस्था ने अपने स्तर पर पत्रिका के प्रकाशन को जारी रखा। इस साल के अंत तक आते–आते अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी, बैंगलोर ने न सिर्फ 2013–14 से 2014–2015 के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की बल्कि साल 2012–13 के लिए भी वास्तविक पुनर्भरण का भरोसा दिया। वर्तमान में यह पत्रिका अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी, बैंगलोर के सहयोग से प्रकाशित हो रही है। इस सहयोग के साथ शिक्षा विमर्श के प्रकाशन में कुछ बदलाव आए हैं। एक, अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन ने दो पार्ट टाइम फील्ड संपादक उपलब्ध करवाए हैं और दूसरे, शिक्षा विमर्श के प्रकाशन के अभी तक के अनुभव से उपजी अन्तर्दृष्टि से बेहतर बनाने के कुछ नए प्रयास किए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षा के परिप्रेक्ष्य से संबंधित लेखों के अनुवाद को सरस एवं बोधगम्य बनाने के लिए भावानुवाद को स्थान दिया जा रहा है। साथ जमीनी स्तर के अनुभवों को प्राथमिकता से लाने पर भी बल दिया जा रहा है।

वर्ष 2013–14 में शिक्षा विमर्श का प्रकाशन नियमित रहा है। सभी 6 अंक प्रकाशित हुए हैं। एक विशेषांक राजस्थान की आरंभिक स्तर की प्रकाशित नई पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा पर केन्द्रित रहा है। इसके अलावा शेष अंक सामान्य रहे हैं।

शिक्षा विमर्श के 15 साल पूरे होने पर 19 अक्टूबर, 2013 को एक दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस आयोजन में शिक्षा विमर्श में रचनात्मक सहयोग देने वाले लेखक, अनुवादक, पाठक, दिगन्तर के साथी और अजीम प्रेमजी यूनीवर्सिटी तथा अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन के सदस्य शामिल हुए। इस विचार गोष्ठी में शिक्षा विमर्श की जरूरत तथा अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सहयोग से शिक्षा विमर्श के प्रकाशन पर पड़ने वाले संभावित प्रभाव के साथ ही शिक्षा विमर्श के 15 साल के अनुभवों एवं शिक्षा विमर्श की

प्रस्तावित नई योजना सभी के साथ साझा की गई। शिक्षा विमर्श को और बेहतर बनाने के लिए सभी सहभागियों से राय ली गई। इस कार्यक्रम में करीब 50 लोग सहभागी रहे। शिक्षा विमर्श के नए स्वरूप में प्रकाशन पर कार्य आरंभ हो चुका है।

शिक्षा विमर्श की सदस्यता का विवरण इस प्रकार है:

शिक्षा विमर्श सदस्यता विवरण	2011–12 की स्थिति	2012–13 की स्थिति	2013–14 की स्थिति
वित्तीय वर्षों में नए जुड़े सदस्य	**87**	**114**	**300**
नए सदस्य जुड़ने पर सदस्यता संख्या	1352 से 1438	1439 से 1552	1553 से 1852
नवीनीकरण के अभाव में सदस्यता बन्द	560	547	815
प्रतियां भेजने वाले सदस्यों की संख्या	**878**	**1005**	**1083**
अजीम प्रेमजी के संस्थानों के लिए अतिरिक्त प्रतियां अनुमानित			**800**
भुगतान प्राप्त सदस्यों की संख्या	**812**	**936**	**1037**
वित्तीय वर्ष में सदस्यता से राशि प्राप्त	**2,17,416**	**2,82,883**	**3,31,490**

चुनौतियां

- शिक्षा विमर्श के सम्मुख अभी यह चुनौती है कि इसकी सदस्यता का विस्तार नहीं हो पा रहा है। व्यक्तिगत सदस्यताओं का समय पर नवीनीकरण एक समस्या बनी हुई है। सदस्यता को विस्तार देने के लिए एक समर्पित व्यक्ति की आवश्यकता है जो कि शिक्षा विमर्श में अभी भी नहीं है।
- शिक्षा विमर्श के लिए अभी भी हिन्दी में गुणवत्तापूर्ण मूल लेख जुटाने में समस्या का सामना करना पड़ रहा है। नए लेखक तैयार करना अभी भी एक चुनौती है।
- शिक्षा विमर्श में जमीनी स्तर से जुड़े अनुभवों को ला पाने में भी समस्या रही है। जो लोग सीधे जमीनी स्तर पर या बच्चों के साथ काम कर रहे हैं, उनके स्तरीय अनुभव नहीं आ पा रहे हैं।

संबलन कार्यक्रम

दिगन्तर द्वारा जयपुर जिले के फागी ब्लॉक में अप्रैल 2013 से शिक्षक संबलन कार्यक्रम (Teacher Empowerment Program) संचालित किया जा रहा है। यह सरकारी प्राथमिक विद्यालय से जुड़े सभी हितधारियों/साझेदारों की सहभागिता पर आधारित एक शोध कार्यक्रम है। यह शिक्षकों के परस्पर संवाद एवं दैनिक शिक्षण पर पोर्टफोलियो लेखन द्वारा शिक्षकों के रिफ्लेक्टिव प्रेक्टिशनर बनने की संभावनाओं को खोजने और परिणामस्वरूप शिक्षकों के सशक्तिकरण का एक प्रयास है। यह तीन साल का कार्यक्रम है। वर्ष 2013–14 के लिए मुख्यतः निम्न कार्ययोजना प्रस्तावित की गई थी:

- राज्य स्तरीय शिक्षा अधिकारियों से 2013–2016 तक तीन वर्ष के लिए कार्यक्रम संचालन की अनुमति लेना।
- कार्यक्रम टीम का चयन करना एवं नए चयनित सदस्यों का उन्मुखीकरण करना।
- फागी में कार्यालय स्थापित करना।
- ब्लॉक स्तरीय शिक्षा अधिकारियों के साथ कार्यक्रम के बारे में साझी समझ विकसित करना।
- विद्यालय संपर्क द्वारा कार्यक्रम से स्वैच्छिक रूप से जुड़ने वाले शिक्षकों का चयन करना और शिक्षकों के साथ बैठक करना।
- शोध प्रस्ताव तैयार करना एवं पोर्टफोलियो प्रपत्र विकसित करना।
- विशेषज्ञ समूह का गठन करना और गोष्ठी में शोध प्रस्ताव को साझा करते हुए उनके सुझाव लेना।
- शिक्षा संबलन कार्यक्रम के कार्यालय में संदर्भ केन्द्र (पुस्तकालय) स्थापित करना।
- छमाही न्यूज लेटर का प्रारूप तैयार करना और पहले अंक का प्रकाशन करना।
- शिक्षकों की मासिक बैठकें आयोजित करना।

अप्रैल 2013 से शुरू हुए सफर का एक वर्ष पूरा हो चुका है। आरंभ में ज्यादा ऊर्जा और समय राज्य स्तरीय शिक्षा अधिकारियों से कार्यक्रम संचालन की अनुमति लेने, टीम का गठन और उन्मुखीकरण करने तथा ब्लॉक स्तर पर कार्यालय स्थापित करने तथा ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों से तालमेल बिठाने में लगाई गई।

कार्यक्रम के लिए चयनित टीम सदस्यों का शिक्षा में शोध, इसके विभिन्न आयाम (रिफ्लेक्शन की अवधारणा, शिक्षण प्रक्रिया में इसका महत्त्व और इसकी तरफ उन्मुख करने हेतु आवश्यक पूर्वशर्तों तथा पोर्टफोलियों लेखन और शिक्षक विकास में इसकी अवधारण पर लगातार विमर्श तथा व्यक्तिगत व समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया) तथा कार्यक्रम के लक्ष्यों की समझ एवं रूपरेखा पर में करीब डेढ़ महीने का उन्मुखीकरण किया गया।

शाला अवलोकन एवं शिक्षकों का चयन

फागी ब्लॉक में कुल 31 नोडल केन्द्र एवं 167 प्राथमिक विद्यालय हैं। इस कार्यक्रम का मकसद है कि शिक्षक स्वेच्छा के साथ सहभागिता करें। कार्यक्रम टीम ने शिक्षकों के चयन के लिए हर नोडल केन्द्रों में प्रारंभिक मानदण्डों के आधार पर चयनित विद्यालयों से सपंर्क किया। ब्लॉक के सभी 31 नोडल केन्द्रों से शिक्षकों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु विद्यालयों से संपर्क किया गयाा जो दो चरणों में पूरा हुआ। प्रथम चरण में जिन नोडल केन्द्रों से शिक्षकों की भागीदारी नहीं मिली थी उन्हें सम्मिलित करने हेतु विद्यालय के द्वितीय चरण को संपादित किया गया। दोनों चरणों में कुल 84 प्राथमिक विद्यालयों से संपर्क किया गया। इनमें से 46 शिक्षकों ने स्वेच्छा से कार्यक्रम के साथ जुड़ने में रुचि प्रदर्शित की जिनमें से 18 महिला शिक्षिका एवं 28 पुरुष शिक्षक हैं। शिक्षकों का चयन करते हुए ब्लॉक के सभी भोगौलिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु सभी नोडल केन्द्रों से शिक्षकों की भागीदारी का प्रयास किया गया।

विशेषज्ञ समिति का गठन एवं बैठक

कार्यक्रम को दिशा–निर्देशित करने के लिए एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया गया जिसमें गीता मेनन (स्वतंत्र शिक्षा सलाहकार), मनीष जैन (व्याख्याता, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नई दिल्ली), रोहित धनकर (सचिव दिगन्तर) हैं। कार्यक्रम में सहभागी अन्य हिस्सेदारों के साथ विशेषज्ञ समिति की बैठक 5 मार्च 2014 को आयोजित की गई। इसमें विप्रो एप्लाइंग थोट्स इन स्कूल्स के प्रतिनिधि, जयपुर जिले के सहायक जिला शिक्षा अधिकारी तथा जिला शैक्षिक प्रशिक्षण संस्थान से संकाय सदस्य, फागी ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक संदर्भ व्यक्ति, फागी एवं दिगन्तर के सदस्यों ने भागीदारी की।

मुख्य उपलब्धियां

- कार्यक्रम में अभी तक ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय शिक्षा अधिकारियों का संतोषजनक सहयोग प्राप्त हुआ है।
- फागी में ऑफिस स्थापित हो चुका है।
- ब्लॉक के सभी नोडल केन्द्रों एवं करीब 84 विद्यालयों के साथ अन्तःक्रिया के बाद 46 शिक्षकों ने कार्यक्रम में भागीदारी हेतु प्रारंभिक रूप से अपनी सहमति दी है।
- शोध प्रस्ताव विकसित कर विशेषज्ञ समिति एवं समस्त हिस्सेदारों के साथ साझा किया चुका है।
- अभी तक कार्यक्रम का सशक्त दस्तावेजीकरण हुआ है।
- फागी ऑफिस में संदर्भ केन्द्र स्थापित किया जा चुका है।

चुनौतियां

- कुछ प्राथमिक विद्यालय शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के पायलेट प्रोजेक्ट में लगे हैं। इसमें अधिक समय की मांग के चलते उन्होंने शिक्षक संबलन कार्यक्रम से जुड़ने में अनिच्छा व्यक्त की है।
- फागी ब्लॉक में इस कार्यक्रम से पूर्व दिगन्तर शिक्षा समर्थन कार्यक्रम का संचालन करता रहा है। इससे एक तरफ काम करने में सहूलियत मिली है तो वहीं शिक्षक इस कार्यक्रम में भी कक्षा कक्ष में अकादमिक मदद की अपेक्षा कर रहे हैं। टीम के समक्ष यह एक चुनौती है। उसी तरह के समर्थन की मांग कर रहे हैं। उन्हें दोनों काम की प्रकृति को समझाने में दिक्कत आ रही है।
- राजस्थान विधानसभा चुनाव एवं इसके बाद लोकसभा चुनाव के चलते शिक्षकों की चुनावों में ड्यूटी, शिक्षण का सुचारु रूप से न चल पाना और फिर परीक्षाओं का आगे टलना भी कार्यक्रम की गति धीमी करने के कारण रहे हैं।
- इस वर्ष में न्यूज लेटर का एक अंक प्रकाशित होना था जो कि विभिन्न व्यस्तताओं के चलते नहीं पाया है। इसकी रूपरेखा एवं योजना पर कार्य चल रहा है।

संदर्भ सहायता इकाई

दिगन्तर के सभी कार्यक्रमों के सफल संचालन में संदर्भ सहायता इकाई का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इकाई का मुख्य कार्य समस्त कार्यक्रमों को प्रशासनिक और व्यवस्थात्मक मदद मुहैया कराना है। यह इकाई लेखांकन एवं वित्तीय प्रबंधन, पुस्तकालय संचालन, सामग्री खरीद व उपलब्ध कराने, आवास व्यवस्था आदि की व्यवस्थाएं करती है। इसके साथ ही संस्था में कार्मिकों के चयन व नियुक्ति के साथ उनके संस्थापन आदि के कार्य करती है। संस्था के सभी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का समन्वयन तथा सहयोग करना इस इकाई का मुख्य काम है ताकि सभी कार्यक्रम अपने लक्ष्य व उद्देश्यों के अनुरूप बेहतर उपलब्धियां हासिल कर सकें।

वर्ष 2013–14 में यह इकाई अपने नियमित काम करती रही है। पुस्तकालय में कुल 8918 पुस्तकें हैं। नई किताबों की खरीद, इंद्राज और दिगन्तर कार्यकर्ताओं के लिए नियमित लेन–देन का कार्य किया गया। पुस्तकालय प्रभारी द्वारा दिगन्तर के मुख्य पुस्तकालय तथा दो अन्य कार्यक्रम की पुस्तकों का भौतिक सत्यापन कर रपट तैयार की गई।

लेखा शाखा ने अपने नियमित कार्य किए हैं जैसे खाता बुक तैयार करना जिसमें खाताबही, बैंक बुक, नकद बुक, अंतिम खाते इत्यादि शामिल हैं। विभिन्न कार्यक्रमों की वित्तीय और ऑडिट रपट तैयार की गई। साथ ही संस्थागत कार्यकर्ताओं का नियमित वेतन बनाने, उसका रिकॉर्ड रखने तथा भविष्य निधि एवं आयकर नियमों के तहत आयकर काटने व जमा कराने और मासिक रिर्टन भेजने के कार्य नियमित तौर पर किए गए।

कम्प्यूटर पर नियमित रपट, पत्रिकाओं की टाइपिंग एवं डिजाइनिंग, पहचान कार्ड्स इत्यादि के साथ संस्थागत पत्र एवं विभिन्न दस्तावेज का टंकण कार्य किया गया है। दिगन्तर विद्यालय संबंधित रपट और विभिन्न टंकण कार्य किया गया।

संदर्भ सहायता इकाई की एक महत्त्वपूर्ण स्टोर है। इसमें साल भर विभिन्न कार्यक्रमों के लिए सामग्री खरीद एवं जरूरत के हिसाब से वितरण का कार्य चलता है जिसका खाता भी रखा जाता है। इस साल स्टोर में स्थायी और अस्थायी सामग्री खरीदने और निर्गमन के कार्य नियमित रूप से किए गए। इसके साथ ही संस्था के सभी कार्यक्रमों और कार्यालय की समस्त सामग्री का भौतिक सत्यापन किया गया। नये उपकरण खरीदे गए और पुराने उपकरणों व सामग्री का सार–संभाल करवाई गई।

वित्तीय अभाव के चलते इस इकाई के पांच कार्यकर्ताओं को अन्य परियोजनाओं में स्थानान्तरित करना पड़ा है तथा 4 कार्यकर्ताओं को कार्य मुक्त भी करना पड़ा है।

संदर्भ सहायता इकाई का एक अन्य कार्य दिगन्तर परिसर की साज–संभाल है। दिगन्तर में आयोजित होने वाले विभिन्न प्रशिक्षणों में आने वाले सहभागियों के लिए रहने एवं खाने की व्यवस्था करना तथा नियमित रूप से कार्यरत कार्यकर्ताओं के लिए उपयुक्त व्यवस्थाओं की देखभाल करना होता है। यह शाखा नियमित रूप से साल भर व्यवस्थित तरीके से यह इंतजाम करती रही है। संस्थागत अन्य सभी कार्य (यात्रा आरक्षण, फॉटोकॉपी या बाजार संबंधी काम आदि) समय पर पूरे किए गए।

इस इकाई का कार्य संस्था में नई नियुक्तियों के लिए आवश्यक कदम उठाना तथा उनका संस्थापन करना है। इस साल चयन प्रक्रिया अनुसार विभिन्न कार्यक्रम में नये कार्मिकों का चयन किया गया जिसमें विज्ञप्ति प्रकाशन, आवेदनों की छटनी, साक्षात्कार प्रक्रिया और अंतिम चयन इत्यादि काम किया गया। इस वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों में चयनित किए गए कार्यकर्ताओं की संख्या हैः शिक्षा सम्बलन कार्यक्रम (टी.ई.पी.), फागी के लिए 4 सदस्य, दिगन्तर विद्यालय के लिए 7 सदस्य तथा अकादमिक संदर्भ इकाई (तरू) के लिए 2 सदस्यों का चयन किया गया।

यह इकाई पिछले साल से वित्तीय सहायता के अभाव से जूझ रही है। इसके चलते इस इकाई के 5 कार्यकर्ताओं को अन्य परियोजनाओं में स्थानान्तरित करना पड़ा है तथा इसी वजह से अक्टूबर माह में 4 कार्यकर्ताओं को कार्य मुक्त भी करना पड़ा है।

परिशिष्ट

- वित्तीय रिपोर्ट lyku

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR
BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH 2014

LIABILITIES		Amount	ASSETS		Amount
GENERAL FUND			**FIXED ASSETS (As per Schedule A)**		
Opening Balance as on 1.4.2013	24804943		W.D.V. As on 1.4.2013	20449988	
Add: Surplus transfer from I & E A/c	4492281	29297224	Add: Addition during the year	3635532	
				24085520	
UNSPENT GRANT			Less: Disposed off during the year	59250	
PHF Programame	1172788		WDV as on 31.03.2014	24026270	
ASED	832460		Less: Depreciation	1149122	22877148
Wipro Limited	2110869				
Wipro TEP Programme	720647		**INVESTMENT**		
ICICI Foundation	1047981	5884745	FDR (DVP)		60557
LOANS & ADVANCES			**CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES**		
Unsecured loan	370000		**CURRENT ASSETS**		
M/s Registhan Pvt. Ltd.					
(non int. bearing)	400000	770000	CASH IN HAND		
Others			Core Programme	19905	
			TEP Programme	21928	41833
Current Liabilities					
Creditors for Staff		1661517	CASH AT BANK (Scheduled Bank)		
Creditors for exp.		341628	Core Programme	5446361	
PF Payable (since paid)		17458	TEP Programme	889329	6335690
TDS Payable (since paid)		109219			
			TDS Receivable		4746464
			Sundry Debtors		889002
			Closing Stock of Books (certified by management)		265405
			OUTSTANDING GRANT		
			Azim Premji Foundation (Dig Vid.)		1884612
			Azim Premji University(Taru)		511997
			Azim Premji Foundation(Vimarsh)		460322
			Telephone Security		8761
		38081791			38081791

A	RP
C	

Auditor's Report

Significant Accounting Policies (As per Schedule 'B')

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 002669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. NO. 71731

PLACE: JAIPUR
DATED: 18.07.2014

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

For Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti
FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER Treasurer | SECRETARY Secretary | PRESIDENT President

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHEL KUD SAMITI, JAIPUR

Schedules annexed to and forming part of the Balance Sheet as at 31.3.2014

SCHEDULE A: FIXED ASSETS

particulars	W. D. V. as On 1.4.13	Addition Before	Addition After	Sales / Disposed	Total As on 31.3.14	Dep. Rate	Dep. For the year	W.D.V. as On 31.3.14
1 H. O. Assets								
Land	90060	0	0		90060	Nil	0	90060
Building Hospital	69192	0	0		69192	2.5	1730	67462
Coolars & Fans	124997	0	0		124997	10	12500	112497
Cycle	622	0	0		622	10	62	560
EERC Building	1028949	0	12042		1040991	2.5	25874	1015117
Fan at EERC	3454	0	0		3454	10	345	3109
Fan at Hospital	345	0	0		345	10	35	310
Furniture & Bedding	96465	0	0		96465	10	9647	86818
Hand pump	3954	0	0		3954	10	395	3559
Hospital Equipment	17786	0	0		17786	Nil	0	17786
Mess Equipment	40664	0	4904		45568	10	4312	41256
Office Equipment	4216	0	0		4216	10	422	3794
P.C. Printer	20204	0	0		20204	10	2020	18184
Photo Copier	9016	0	0		9016	10	902	8114
Refrigerator	1373	0	0		1373	10	137	1236
TV. V.C.R.	4825	0	0		4825	10	483	4342
Type writer	276	0	0		276	10	28	248
Vehicle	0	0	0		0	10	0	0
Electric equipment	71868	0	0		71868	10	7187	64681
Fire Fighting equipment	5746	0	0		5746	10	575	5171
Building	293669	0	0		293669	2.5	7342	286327
Tube Well	47035	0	0		47035	Nil	0	47035
School Land	1616996	0	0		1616996	Nil	0	1616996
Solar Hot Water System	43395	0	0		43395	10	4340	39055
2 School Assets								
Fans	8927	0	0		8927	10	893	8034
Furniture & Off. Equip.	58967	0	0		58967	10	5897	53070
Science laboratory	2615	0	0		2615	10	262	2353
Tape Recorder	710	0	0		710	10	71	639
3 Shaj Shiksha Project								
Furniture	4821	0	0		4821	10	482	4339
Computer & printer	19730	0	0		19730	10	1973	17757
4 SIR RATAN TATA PROJECT								
Office Furniture	1777	0	0		1777	10	178	1599
Hand Pump	6151	0	0		6151	10	615	5536
Building	65940	0	0		65940	2.5	1648	64292
5 Room to Read Prog.								
Office Furniture	7417	0	0		7417	10	742	6675
6 ICICI CORE PROGRAMME								
AEEP Primary								
Building Aug. Primary	352789	0	0		352789	2.5	8820	343969
Furniture & School equ. Primary	170241	0	0		170241	10	17024	153217
Building	2127069	0	0		2127069	2.5	53177	2073892
Library Books Primary	41646	0	0		41646	10	4165	37481
Laboratory	16267	0	0		16267	10	1627	14640
AEEP UP								
Library Aeep Up	33097	0	0		33097	10	3310	29787
Furniture & School equ.	53338	0	0		53338	10	5334	48004
TRSU								
Computer S&AU	261730	0	0	16500	245230	10	24523	220707
Furniture S&AU	114151	29300	2493		145944	10	14470	131474
Office Aug. S&AU	195481	11525	0		207006	10	20701	186305
Printer With copier S& AU	11373	0	0		11373	10	1137	10236
Telepphone,EPBX & FAX S& AU	85679	0	0	1650	84029	10	8403	75626
Cell Phone Instrument	3783	0	0		3783	10	378	3405
TARU								
Equipment Taru	395564	40800	113880	14200	536044.00	10	47910	488134
Library Taru	427248	4511	35416		467175.00	10	44947	422228
Furniture Taru	158443	0	59139		217582.00	10	18801	198781
Computer Taru	114271	0	0	10900	103371.00	10	10337	93034

S. D. PANDEY AUDITED JAIPUR

A	RP
C	

Infrastructure & Building Taru	158145	0	0		158145.00	10	15815	142330
Vimarash								
Furniture Vimarsh	3681	0	0		3681.00	10	368	3313
Computer & Accessories Vimarsh	82847	84300	34100	550	200697.00	10	18365	182332
							0	0
7 **Digantar CPC Prog.**								
Equipment	62723	0	0		62723.00	10	6272	56451
8 **Shiksha Samarthan**								
Furniture & Equipment(Cluster)	201728	0	0	3500	198228.00	10	19823	178405
Furniture & Equipment(Office)	196687	0	0	500	196187.00	10	19619	176568
Teaches Resource Liabary(CRC)	41006	0	0		41006.00	10	4101	36905
Teaches Resource Liabary(Office)	59225	0	0		59225.00	10	5923	53302
9 **Digantar Baran Prog.**								
Inf. Supp. To DITE/BRC	245340	0	0		245340.00	10	24534	220806
Computer	139162	0	0	10450	128712.00	10	12871	115841
Inf. Of RSA office	54716	0	0		54716.00	10	5472	49244
Inverter	11168	0	0		11168.00	10	1117	10051
Lib. For QIU	62018	0	0		62018.00	10	6202	55816
Cluster level Lib. Supp.	29659	0	0		29659.00	10	2966	26693
10 **Digantar SDTT Prog.**								
Teachers Resource Lib.(Blo. Off)	66392	0	0		66392.00	10	6639	59753
Teachers Resource Lib.(Pro.Off)	44272	0	0		44272.00	10	4427	39845
Computer (B.O.)	17529	0	0		17529.00	10	1753	15776
Computer (Pro. Off.)	53572	0	0		53572.00	10	5357	48215
Equipment for B.O.	96660	0	0		96660.00	10	9666	86994
Equipment for Pro.Off.	86854	0	0	1000	85854.00	10	8585	77269
Equipment for R.S.	89698	0	0		89698.00	10	8970	80728
							0	0
11 **Digantar Literacy Research Prog.**								
Epbx(Res. Proj)	10743	0	0		10743.00	10	1074	9669
Equipment (Res. Proj)	177702	0	0		177702.00	10	17770	159932
12 **Digantar Vidyalay Programme**								
Lease Of Land	236055	0	0		236055.00	0	0	236055
Construction	4827601	40000	0		4867601.00	2.5	121690	4745911
Modification of Existing Building	970509	0	0		970509.00	2.5	24263	946246
Boundary Wall Sports Mat.	1677053	0	0		1677053.00	2.5	41926	1635127
Computers & Printers	719734	0	0		719734.00	10	71973	647761
Furniture	203240	0	0		203240.00	10	20324	182916
Laboratory	102414	0	0		102414.00	10	10241	92173
School Equipment	345726	0	15407		361133.00	10	35343	325790
Library Books	82590	0	0		82590.00	10	8259	74331
Art & Musical Instriuments	158284	0	0		158284.00	10	15828	142456
Four Wheel Vehicle(Bolaro)	650674	0	0		650674.00	10	65067	585607
Service fess for Aechitech	50000	0	0		50000.00	2.5	1250	48750
JDA Approval & Regu.	7500	0	0		7500.00	2.5	188	7312
13 **Digantar PHF Programme**								
Laptops & Computers	92749	0	0		92749.00	10	9275	83474
14 **ASED Programme**								
School Bus	0	0	2500000		2500000	10	125000	2375000
Two Toilet construction(WIP)	0	0	418765		418765	2.5	0	418765
Water Treatment Plan & Cooler(WIP)	0	0	82500		82500	10	0	82500
15 **TEP Phagi**								
Equipment	0	146450	0		146450	10	14645	131805
	20449988	**356886**	**3278646**	**59250**	**24026270**		**1149122**	**22877148**

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 02669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. No.71731

PLACE: JAIPUR
DATED: 18.07.2014

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

For Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER
Treasurer

PRESIDENT
President

SECRETARY
Secretary

A	RP
C	

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR
INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2014

	INCOME		Core Proramme	TEP Phagi	TOTAL
By	Grant in aid from APF(DVP)	13621647			
	Less: Outstanding grant as per last year	2002662			
		11618985			
	Add: Outstanding grant for the year	1884612	13503597		13503597
	Grant in Aid APF (TARU)	4425045			
	Add : Unspent as per last year	366747			
		4791792			
	Add: Outstanding grant for the year	511997	5303789		5303789
	Grant in aid from ICICI Foundation(TRSU)				
	Opening Balance	1974592			
	Add: Interest Received on FDR made from grant during the year	3053723			
		5028315			
	Less : Unspent Grant	1047981	3980334		3,980,334
	Grant In Aid APF(VIMARSH)				
	Received during the year	1240695			
	Add: Outstanding grant for the year	460322	1701017		1,701,017
	Grant In Aid ASED				
	Received During The Year	3833725			
	Less : Unspent Grant	832460	3001265		3,001,265
	Grant In Aid Wipro Ltd	2479750			
	Less : Unspent Grant	720647		1759103	1,759,103
	Bank Interest		71,451	829	72,280
	Interest on FDR (Dig. Vid.)		5,317		5317
	Subscription of Educational Magazine		329,990	-	329990
	Teaching Material Disposal		211,029	-	211029
	Hostel Rent		66,000	-	66000
	Donation		42,100		42100
	Institutional Fee		535,400	-	535400
	Library Missing Book		8,374	-	8374
	Boarding, Lodging & Training Charge		963,492	-	963492
	Closing Stock of books		265,405	-	265405
	Other Income		290,590	-	290,590
	Subscription From Members		10		10
	Transfer to Balance Sheet			-	0
	Total		**30279160**	**1759932**	**32039092**

CONTD.

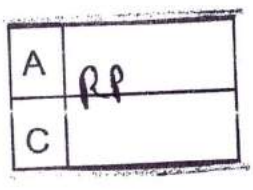

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI, JAIPUR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2014

	EXPENDITURE	Core Proramme	TEP	TOTAL
To	Salaries	19645453	1022837	20668290
	Honorarium	20400	216000	236400
	Staff Selection & Team Building	105215	20601	125816
	Postage & Telegram Exp.	323985	0	323985
	Legal/Consultancy fee	16200	0	16200
	Electricity Exp.	417722	0	417722
	Audit Fees	111287	0	111287
	Material & Activity exp.	149,274	-	149274
	News Paper & Magazines	60147	45958	106105
	Training/Meeting And Work Shop	0	46333	46333
	Printing & publication	833102		833102
	Repair & Maintenance	508156		508156
	Stationery Exp..	81019		81019
	Travel & Local conveyance	157849	26934	184783
	School Vehicle Maint.	79710		79710
	Books & Teaching Learning material	642587		642587
	Boarding & Lodging Exp.	1867		1867
	Bank Charges	2705	0	2705
	TDS Demand Charges	280	0	280
	Depreciation	1134477	14645	1149122
	Office Running Cost	128551	102,144	230695
	Office Maint. Exp.	0	86422	86422
	Other School Activity	1,087,950		1087950
	Other Misc Exp.	-		0
	Foundation Course Exp.	171203		171203
	Campus Pet Exp.	21883		21883
	Vidyalay Pet Exp.	20241		20241
	DFID Exps.	35534		35534
	E.C./G.B. Meeting Exp.	8067		8067
	Land Lease Rent	154649		154649
	Institutional Cost /Contingancy	-	45,424	45424
	Transfer to Balance Sheet	4359647	132634	4492281
		30279160	**1759932**	**32039092**

AUDITORS REPORT

SIGNED IN TERMS OF OUR REPORT OF EVEN DATE ANNEXED

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 002669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. No. 71731

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

PLACE: JAIPUR
DATED: 18.07.2014

For Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER Treasurer

SECRETARY Secretary

PRESIDENT President

A	RP
C	

DIGANTAR SHIKSHA EVAM KEHL KUD SAMITI, JAIPUR
Schedules annexed to and forming part of Balance Sheet as at 31.3.2014

SCHEDULE B:

A **SIGNIFICANT ACCOUNTING POLICIES**

RECOGNITION OF INCOME AND EXPENDITURE

INCOME

INCOME IS ACCOUNTED FOR ON ACCRUAL BASIS EXCEPT INSTITUTIONAL FEE AND SUBSCRIPTION FROM MEMBER IS ACCOUNTED ON CASH BASIS.

EXPENDITURE

GENERALLY EXPENSES ARE ACCOUNTED FOR ON ACCRUAL BASIS.

FIXED ASSETS

(i) FIXED ASSETS VALUATION IS ON HISTORICAL COST LESS DEPRECIATION EXCEPT LAND.
(ii) FIXED ASSETS ARE STATED AT COST LESS DEPRECIATION WHICH IS CHARGED ON W.D.V. BASIS @ 2.5% ON BUILDING AND @ 10% IN GENERAL EXCEPT ON HOSPITAL ASSETS ON WHICH NO DEPRECIATION IS PROVIDED SINCE THEY ARE NOT IN USE.
(iii) CONSTRUCTION EXPENSES FOR RS.418765/- HAS BEEN INCURRED DURING THE YEAR AND SUCH AMOUNT HAS BEEN TAKEN ON THE BASIS OF VOUCHERS.

INVENTORY

STOCK OF PUBLICATION BOOKS IS VALUED AT 75% OF COST AS THE MANAGEMENT ESTIMATES WRITEOFF ON ACCOUNT OF OLD EDITION WHICH GO OUT OF CIRCULATION.

B THE SOCIETY IS EDUCATIONAL INSTITUTION EXISTING SOLELY FOR PURPOSES OF EDUCATION AND NOT FOR PURPOSES OF PROFIT. THE SOCIETY HAS BEEN GRANTED EXEMPTION U/S 10(23C)(vi) OF IT ACT, 1961 BY THE INCOME TAX DEPARTMENT.

FOR S.D. PANDEY & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
FRM NO. 02669C

(RAJIV PANDEY)
PARTNER
M. No. 71731

PLACE: JAIPUR
DATED: 18.07.2014

S.D. PANDEY & CO. AUDITED JAIPUR

for Digantar Shiksha Evam Khelkud Samiti

FOR DIGANTAR SHIKSHA EVAM KHELKUD SAMITI

TREASURER Treasurer

SECRETARY Secretary

PRESIDENT President

दिगन्तर

शिक्षा एवं खेलकूद समिति

टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड

जगतपुरा, जयपुर-302017 राजस्थान

फोन : 0141–2750230, 2750310; फैक्स : 2751268

वेबसाइट : www.digantar.org